प्रथम प्रश्न—पत्र
खण्ड (अ)
इकाई — 2 (मध्यकालीन भारत)

- 11 वीं से 18 वीं शताब्दी तक भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास

- मुगल शासक और इनका प्रशासन,मिश्रित संस्कृति का अभ्युद्य

- ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव

An Institute for MPPSC Examination

❖ 11 वीं से 18 वीं शताब्दी तक भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

1. अलबरुनी

- महमूद गजनवी के दरबार का महत्वपूर्ण विद्वान।
- प्रमुख रचना: किताबुलहिन्द, तारीख—ए—यामिनी।
- इसने सूफी रचना में भारतीय गणित, इतिहास, भूगोल, खगोल दर्शन आदि की समीक्षा की है।
- इसने ब्रम्हसिद्धांत, वृअहसंहिता आदि का अध्ययन किया है।

2. तराइन का युद्ध

- तराइन का प्रथम युद्ध— 1191 ई. गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान के मध्य— गौरी की पराजय।
- तराइन का द्वितीय युद्ध —1192 ई.— गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया।

3. चंदावर का युद्ध

- 1194 ई. में
- मुहम्मद गौरी बनाम जयचंद।
- जयचंद की पराजय तथा हत्या।

4. रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

- भारत की प्रथम मुस्लिम महिला शासक।
- इसके शासनकाल की जानकारी मिन्हस—उस—सिराज की रचना से प्राप्त होती है।
- कार्य :
  - पर्दा प्रथा का त्याग।
  - गैर तुर्को को उच्च पदों पर नियुक्त किया।

5. बलबन (1265—1287 ई)

- मूल राम— बद्रादुद्दीन, उपाधि— उलगु खाँ
  कार्य—
- तुर्क एक चहलगानी का विनाश।
- सिजदा व पैकोस प्रथा का प्रारंभ।
- विरोधियों के प्रति ''रक्त एवं लोकनीति अपनाई।

6. बलबन का राजत्व सिद्धांत

- बलबन ने स्वंय को ''अफरासिपाल वंशज'' से संबद्ध कर राजत्व सिद्धांत दिया।

विशेषता:

1. सुल्तान का पद ईश्वर के द्वारा प्रदत्त है।
2. सुल्तान का निरंकुश होना आवश्यक है।

7. अमीर खुसरो

मूल नाम — मुहम्मद हसन
उपाधि — तुतिए हिंद
कार्य—

- सितार, तबले का अविष्कार।
- बलबन से मुहम्मद तुगलक तक के सुल्तानों का वर्णन किया ळें

रचना—

- तुगलकनामा, लैला—मजनू, तारीख —ए—दिल्ली

8. खिल्जी क्रांति

- सल्तनत में खिल्जी वंश की स्थापना को खिल्जी क्रांति की संज्ञा दी जाती है।
- खिल्जी वंश ने 1290–1320 तक 30 वर्ष शासन किया।
- प्रमुख शासक जलालुद्दीन खिल्जी, अलाउद्दीन खिल्जी, कुतुबुद्दीन मुबारक शाह, नसीरुद्दीन खुसरो शाह।

9. इब्नबतूता :

- मोरक्को यात्री, जो लगभग 1333 ई. में भारत आया।
- सुल्तान ने इसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया।
- पुस्तक — रेहला
- अपनी पुस्तक में उसने विदेशी व्यापारियों का आवागमन, डाक चौकियों की स्थापना व गुप्तचर व्यवस्था का वर्णन किया है।

10. सैययद वंश (1414-1451 ई) :

- संस्थापक: खिज्र खाँ
- कुल 4 शासक, जिन्होंने 37 वर्षो तक शासन किया।
- स्त्रोत— याहिमा बिन सरहिंदी की तारीख ए मुबारकशानी

11. खिज्र खाँ (1414-1421 ई) :

- तैमूर का वायसराय के रुप में शासन आरंभ।
- रैयत ए आला की उपाधि धारण कर शासन किया।
- सिक्कों पर तुगलक शासको का नाम रहने दिया तथा मंगोलों का खुतबा पढ़वाया।

12. पानीपत का प्रथम युद्ध :

- 21 अप्रैल 1526 में—बाबर तथा इब्राहिम लोदी के मध्य।
- बाबर की विजय के साथ मुगल वंश का आरंभ।
- बाबर को युद्ध हेतु पंजाब के शासक दौलत खाँ लोदी तथा आलम खाँ ने आमंत्रित किया।

13. इक्ता :

- इस प्रथा का आरंभ इल्तुतमिश द्वारा किया गया।
- इसके अंतर्गत भूमि के विशेष खंडो से राजस्व का अधिकार सैनिकों को उनके वेतन के बदले दिया जाता था।
- बलवन से इसे जीवन भर के लिए प्रदान किया तथा हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगा दिया।

14. जियाउद्दीन बरनी :

- रचना: तारीख—ए—फिरोजशाही, फतवा—ए—जहांदारी हसरतनामा।
- 17 वर्ष मुहम्मद तुगलक के संरक्षण में रहा।
- बलबन से फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में उपस्थित।

15. याह्या बिन सरहिंदी :

- रचना: तारीख—ए—मुबारकशाही

- मुबारक शाह के प्रशासन में।
- सैयद वंश की जानकारी का एकमात्र स्त्रोत।

16. दीवान–ए–अर्ज :

- बलबन द्वारा स्थापित सैन्य विभाग।
- सैनिकों की भर्ती, वेतन का निर्धारण।
- सैनिक अभियानों का आयोजन।

5 □□ां □□प्रश्नोत्तर

17. मध्यकालीन भारतीय इतिहास जानने के स्त्रोतों का उल्लेख करें।

- **साहित्यिक स्त्रोत:**
  1. **चचनामा:** इस ग्रंथ में अरब आक्रमण के समय सिंध की स्थिति का वर्णन है।
  2. **तहकीक ए हिंद** – इसमें गजनवी के आक्रमण का वर्णन एवं भारत की सामाजिक आर्थिक राजनैतिक स्थिति का वर्णन है।
  3. **ताबकात ए. नासिरी –** इसमें गुलामवंश के वर्णन शासकों, तुर्क शासन का वर्णन है।
  4. **तारीख ए फिरोजशाही**– बलबन से तुगलक तक के इतिहास का वर्णन है।
  5. **पद्मावत्:** मालिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित इस ग्रंथ में चित्तौड़ के इतिहास का वर्णन किया गया है।
  6. अमीर खुसरो की रचनाएँ (1289–1325 तक) इनमें बलबन से लेकर मुहम्मद तक के शासन का वर्णन है।
- **विदेशी यात्री वृत्तांत:**
  1. अलबरुनी ने तहकीक ए हिन्द में भारतीय इतिहास का सबसे प्रामाणिक विवरण दिया है।
  2. इब्बतूता वृत्त रेहला में मुहम्मद तुगल के शासन का वर्णन किया गया है।
  3. मार्कोपोलो ने दक्षिण भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास के विषय में बताया गया है।
  4. निकोलो कोण्टी ने विजयनगर साम्राज्य वर्णन के प्रशासन का उल्लेख किया है।
- **शाही फरमान व पत्र:** मध्यकालीन सुल्तानों द्वारा जारी फरमानों से आर्थिक नीति, प्रशासन विदेश नीति संबंधी जानकारी प्राप्त होती है।

18. महमूद गजनी के भारत पर आक्रमण के उद्देश्य लिखिए?

- वह भारत की अतुल धन संपदा को लूटना चाहता था अत: उसने मंदिरों पर आक्रमण किए जहाँ धन संचित था। कुछ इतिहासकार मानते है कि वह भारत में इस्लाम का प्रचार करना चाहता था वह भारत पर आक्रमणों को जहाद समझता था।
- वह मूर्तिपूजा विरोधी था अत: उसने भारत में मंदिरों के विध्वंश के उद्देश्य से आक्रमण किया। वह भारत से हिन्दूशाही को समाप्तकर विजय व यश की इच्छा रखता था अत: उसने भारत पर आक्रमण किए।
- राज्य विस्तार की लालसा वह महत्वाकांक्षी था वह अपने साम्राज्य का भारत मक विस्तार करना चाहता था।

19. महमूद के आक्रमणों के भारत पर क्या प्रभाव पड़े।

- उसने हिंदू राज्यों की शक्ति का विनाश कर दिया तथा पंजाब की शक्ति का विनाश कर दिया तथा पंजाब पर अधिकार कर लिया।
- भारत से अपार–धन संपत्ति अपने साथ गजनी ले गया।
- उत्तर भारत रणनीतिक दृष्टि से असुरक्षित हो गया। गजनवी के आक्रमण से उसके आक्रमण से उसके आक्रमण से भारत में इस्लाम पर प्रचार–प्रसार हुआ।
- महमूद के दरबारियों द्वारा भारत के इतिहास का वर्णन किया गया है।

20. मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण के क्या उद्देश्य थे?

- वह भारत में साम्राज्य स्थापना करना चाहता था।

- वह पंजाब में अधिपत्य करना, अपना स्वाभाविक अधिकार मानता था वह गजनवी वंश के शासन को पंजाब में समाप्त कर पूर्व की ओर बढ़ना चाहता था।
- एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हेतु उसे धन की आवश्यकता थी।
- भारत में इस्लाम का प्रसार एवं मुहम्मद साहब के संदेश का प्रचार करना चाहता था।
- भारत पर विजय प्राप्त कर शक्ति व सम्मान की इच्छा रखता था।

21. मुहम्मद गौरी द्वारा भारत पर किए गए प्रमुख आक्रमणों का उल्लेख करें।

1. **मुल्तान पर आक्रमण (1175 ई):—** वह करमार्थियन संप्रदाय के मुस्लिमों से युद्ध से विजयी रहा। सुल्तान पर अधिकार तथा सुल्तान पर अधिकार कर लिया।
2. **गुजरात पर आक्रमण (1176 ई):—** गौरी व गुजरात के शासक मूलराज द्वितीय के मध्य युद्ध हुआ जिसमें मूलराज द्वितीय पराजित हुआ। भारत में गौरी की प्रथम पराजय थी।
3. **पंजाब पर आक्रमण (1179-1192 ई)**

- गौरी ने पंजाब शासक मालिक खुसरों से कई बार युद्ध किया और अंततः 1186 ई. में उसे पराजित कर उसकी हत्या कर दी। और पंजाब पर अधिकार कर लिया।
- मालिक खुसरों गजनवी वंश का अंतिम शासक था।

4. **तराईन प्रथम (1191 ई):** गौरी द्वारा पंजाब व भटिंडा पर अधिकार करने के कारण अजमेर के चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय ने 1191 ई. में गौरी पर आक्रमण कर दिया। तराइन के इस युद्ध में गौरी पराजित हुआ। भारत में गौरी की यह दूसरी पराजय थी।
5. **तराईन द्वितीय (1192 ई):** मुहम्मद गौरी ने 1192 ई में 1 लाख 20 हजार की सेना के साथ पृथ्वीराज पर पुनः आक्रमण किया। तराइन के मैदान में हुआ यह युद्ध निर्णायक रहा। जिसमें पृथ्वीराज की हार हुई।
6. **चंदावर का युद्ध (1194 ई):** इस समय उत्तर भारत का कन्नौज राज्य अतिशक्तिशाली था। अतः गौरी ने यहाँ के गहड़वाल वंशीय शासक जयचंद को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया।
7. **ग्वालियर आक्रमण (1196 ई):** गौरी ने ग्वालियर के शासक संरक्षण पाल में 1195 ई. में संन्धि कर ली तथा लगभग डेढ़ वर्ष के बाद किले पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया।
8. **खोखरों से संघर्ष (1205 ई):** पंजाब में खोखरों ने गौरी के सूबेदार पर आक्रमण कर लाहौर जीतने का प्रयास किया। अतः 1205 ई. में गौरी ने झेलम चिनाव नदी के मध्य खोखरों का कत्लेआम किया।

22. मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण के क्या परिणाम हुए।

- यह भारत में उसका अंतिम युद्ध था।
- इसके साथ ही राजपूत राज्य की स्थापना के स्वप्न का अंत गौरी द्वारा विजित क्षेत्रों में नवीन गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा की गई।
- राजवर्ग की सल्तनत समाप्त हो गई तथा पंजाब में गौरी का अधिकार हो गया।
- गौरी के साथ आए प्रसिद्ध संत मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती संप्रदाय की नीव रखी।
- भारत में नवीन सांस्कृतिक परिवर्तन आए जिनमे इंडो इस्लामिक स्थापत्य शैली व भाषा में फारसी का प्रयोग प्रमुख है।

23. तुर्को के विरुद्ध राजपूतों की पराजय के कारण लिखिए?

1. भारत में केन्द्रीय सत्ता का अभाव जिससे एकता में कमी।
2. राजपूतों के पास तथा सामंतों की सेना पर निर्भर रहना। स्थायी सेना का न होना।
3. तुर्को द्वारा युद्ध में अश्व व नई तकनीक का प्रयोग जबकि राजपूत परंपरागत तकनीक से ही युद्ध करते थे।
4. पश्चिमोत्तर प्रांत की उपेक्षा राजपूतों से आक्रमणकारियों को रोकने के प्रयास नहीं किए।

5. दोषपूर्ण वंशानुगत राजतंत्र प्रणाली जिसमें शासक का पुत्र ही शासक होता था भले ही वह अयोग्य हो।
6. तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के तहत युद्ध केवल क्षत्रियों का दायित्व था। अन्य वर्ग युद्ध में भाग नहीं लेते थे।

24. गुलामवंश के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक के महत्वपूर्ण कार्यो का उल्लेख कीजिए।

राजनीतिक कार्य:

- 24 जून 1206 को इसने मुहम्मद गौरी द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में गुलामवंश की स्थापना की।
- अपनी राजधानी लाहौर को बनाया।
- प्रतिद्वंद्वी एल्दौल कुबाचा, इल्तुतमिश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर उन्हें शासन के पक्ष में कर लिया, तथा वहाँ व्याप्त अराजकता का अंत कर शांति की स्थापना की।
- बिहार, बंगाल पर नियंत्रण स्थापित किया।
- वह भारत में मुस्लिम साम्राज्य का संस्थापक था।

स्थापत्य संबंधी कार्य:

- दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव डाली।
- दिल्ली में ही कुब्वल उल—इस्लाम मस्जिद का निर्माण कराया।
- अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद निर्माण कराया।

25. इल्तुतमिश की राजनैतिक उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

या

इल्तुतमिश गुलामवंश का वास्तविक संस्थापक था सिद्ध करें।

या

उसने निकट परिस्थितियों का सामना बड़ी कुशलता से किया। डॉ.ईश्वरी प्रसाद के कथन की पुष्टि कीजिए।

- उसने चालीसा दल का गठन किया जिसमें सुल्तान के निष्ठावान 40 तुर्क सरदार होते थे जो शासन संचालन में सहायता करते थे।
- उसने दिल्ली के षंडयंत्रकारी अमीरों का क्रूर दमन कर दिल्ली में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली।
- उसने 1215 में एल्दौज को तराइन युद्ध में हराया और उसका वध कर दिया।
- उसने 1217 में कुबाचा को पराजित किया। किन्तु संधि कर ली अंतत 1228 ई. में मंगोलों द्वारा कुवाचा पर आक्रमण कर लाहौर, सुल्तान व सिंध पर अधिकार कर लिया।
- चंगेज खाँ द्वारा पीछा किए जाने पर उसने स्वतंत्र खारिज्म शासक मंगबरनी को शरण न देकर मंगोल आक्रमण से राज्य की सुरक्षा की।
- राजपूत राज्य रणथंभौर, मंदसौर, अजमेर, विजित किया साथ ही ग्वालियर व कालिंजर पर अधिकार कर लिया।
- दोआब क्षेत्र पर विजय प्राप्त की तथा बदायूँ, कन्नौज, बनारस, अवध आदि स्वतंत्र राज्यों को जीतकर सल्तनत के अधीन कर लिया।
- शासन संचालन हेतु इक्तेदारी प्रथा आरंभ की जिसके तहत सैन्य असैन्य अधिकारियों को नकद—वेतन के स्थान पर कृषि भूति (इक्ता) प्रदान किए।

26. तुकीन ए चहलगामी पर टिप्पणी कीजिए।

- इल्तुतमिश ने चहलगामी की स्थापना की।
- यह 40 तर्क सरदारों का संगठन था।

उद्देश्य व कार्य:—

- ये राज्य प्रशासन सम्हालने में सुल्तान की सहायता करते थे।

- ये राज्य के आंतरिक विद्रोहों को दबाने व आंतरिक सुरक्षा का कार्य करते थे।
- युद्ध में सेना की व्यवस्था करते थे।
- शरियत के अनुसार शासन संचालन सुनिश्चित करते थे।
- सुल्तान के शासन को समर्थन हेतु दवाब बनाते थे।
- शासन में अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण बलबन ने चहलगामी का दमन कर दिया था।

27. इक्ता प्रणाली पर टिप्पणी कीजिए।

- इल्तुतमिश द्वारा आरंभ राजस्व प्रणाली जिसमें राज्य की समस्त भूमि को दो भागों इक्ता और खालीसा में विभक्त किया।
- इस व्यवस्था में अधिकारियों को वेतन के बजाय इब्ले दिए जाते थे।
- ऐसे इक्ता भूमि प्राप्त अधिकारी इक्तेदार कहलाए।
- इक्तेदार द्वारा इक्बा भूमि पर कृषि कार्य कराते थे तथा कर राजस्व वसूलते थे।
- प्राप्त राजस्व का कुछ हिस्सा केन्द्रीय राजकोष में जमा किया जाता था। तथा बाकी हिस्सा वेतन एवं सेना खर्च हेतु इक्तेदारों द्वारा उपभोग किया जाता था।

28. रजिया के शासन की आरंभिक चुनौतियों का वर्णन करें।

- दिल्ली सल्तनत की प्रथम महिला शासिका रजिया 1236 ई. में दिल्ली की चुनौतीपूर्ण गद्दी पर बैठी।

चुनौतियाँ:

1. सबसे बड़ी चुनौती उसका महिला होना था चूँकि शरियत कानून महिला सुल्तान को मान्यता नहीं देता था।
2. ऐतगीन, अल्तूनिया, कबीर खाँ रजिया को अपदस्थ कर रजिया के भाई को शासक बनाना चाहते थे।
3. सल्तनत में व्याप्त अराजकता का लाभ उठाकर राजपूत अपनी खोई शक्ति पुनः चाहते थे अतः वे रजिया शासन को समर्थन नहीं देना चाहते थे।
4. तुर्क अमीरों का समर्थन प्राप्त न होना चूँकि वे महिला शासन नहीं चाहते थे।
5. अधिकांश अधिकारी वर्ग का रजिया के विरुद्ध होना जिनमें वजीर जुनैदी प्रमुख था। इस प्रकार शासन में अराजकता व आंतरिक विद्रोहों का वातावरण था।

29. रजिया ने अपने शासन को सफल बनाने के लिए क्या प्रयास किए।

या

रजिया एक कुशल शासिका थी सिद्ध कीजिए।

1. रजिया ने सुल्तान के सम्मान में वृद्धि हेतु नारी सुलभ लक्षणों का त्याग किया। वह दरबार में बिना पर्दा, तथा हाथी पर चढ़कर जाने लगी।
2. उसने निरंकुश शासक के समान आचरण किया तथा पुरुष लक्षणों को अपना लिया।
3. उसने मालिक याकूत को योग्यता आधारित अश्वशाला प्रधान का पद प्रदान किया जो कि एक गैर तुर्क था।
4. मुल्तान, बदायूँ, लाहौर के सूबेदारों एवं जुनैदी के मध्य फूट डालकर पुरी कूटनीतिक बुद्धिमत्ता का प्रयोग करते हुए अधिकांश का वध करवा दिया।
5. शासन को तुर्क सरदारो से मुक्त कर लिया तथा विश्वासपात्रों को महत्वपूर्ण पद दिए।
6. राजपूतों का दमन कर रणथंभौर व ग्वालियर पर अधिकार कर लिया।
7. अल्तूनिया द्वारा बंदी बनाए जाने पर कूटनीतिक कुशलता दिखाते हुए उससे विवाह कर लिया। अतः वह कूटनीतिक व प्रशासकीय दृष्टि से कुशल थी तथा उसमें वे सभी गुण विद्यमान थे जो एक कुशल शासक में होने चाहिए।

30. रजिया के पतन के कारण लिखिए।

1. सिराज के अनुसार उसके पतन का एकमात्र कारण उसका स्त्री होना है।
2. इस्लाम के विरुद्ध था जिससे शासन का जनसमर्थन कम हो गया।

3. वह शासन के संपूर्ण शक्ति अपने हाथों केन्द्रित रखना चाहती थी।
4. जिससे अमीर वर्ग उससे रुष्ट हो गया।
5. अमीर एतगीन, लाहौर का सूबेदार कबीर खाँ, भटिंडा के सूबेदार अलूनिय के आंतरिक विद्रोह अमीर ए आखुर का पद दिया। जिसमें अमीर तुर्क शासन विरुद्ध हो गए।

31. रजिया के चारित्रिक गुणों का मूल्यांकन कीजिए।

1. कुशल शासिका + सत्ता की समस्त शक्ति अपने हाथ में रखकर कुशलता से विद्रोहियों का दमन किया।
2. न्यायप्रिय व उदार—जनता दरबार का आयोजन करती थी जहाँ फरियादें सुनकर स्वंय न्याय करती थी।
3. सफल कूटनीतिज्ञ—अल्तूनिया द्वारा बंदी बनाए जाने पर कूटनीतिक बुद्धिमत्ता का प्रयोग करते हुए उससे विवाह कर ली।
4. कुशल सेनानायक—अधिकांश युद्धों का नेतृत्व उसने स्वंय किया।
5. दकियानूसी शरियत कानूनो का पुरजोर विरोध किया और नारी सुलभ लक्षणों का त्याग किया।
6. वह मध्यकाल की प्रथम महिला मुस्लिम शासिका थी जिसने अपनी योग्यता व चरित्र के बल पर दिल्ली सल्तनत की राजनीति को प्रभावित किया।

32. बलबन द्वारा कुशल प्रशासक के रुप में किए गए कार्यो का उल्लेख करें?

1. राजपद की गरिमा की स्थापना हेतु सर्वप्रथम उसने राजस्व सिद्धांत का प्रतिपादन किया। जिसके अंतर्गत सिजदा पैलौस प्रथाओं का प्रचलन किया।
2. उसने अमीरों के मद्यपान, सार्वजनिक सम्मेलनों में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिए।
3. तुर्कान ए — चहलगानी के विरुद्ध रक्त व लौह की नीति का पालन करते हुए क्रूरता से दमन किया।
4. गुप्तचर विभाग का संगठन किया
5. सेना का पुर्नगठन (दीवान ए गर्ज)
6. विद्रोहों का दमन। (बंगाल, मेवात, बदायूँ में)
7. पश्चिमोत्तर प्रांत में मंगोल सुरक्षा हेतु सीमा सुरक्षा पंक्ति निर्माण। इस प्रकार उसने राजपद की गरिमा बनाए रखने के साथ शासन को सुदृढ़ता प्रदान की।

33. बलबन के राजत्व सिद्धांत का उल्लेख करें।

1. सुल्तान पद की गरिमा हेतु राजस्व सिद्धांत का प्रतिपादन।
2. स्वंय को ईरानी अफराशियान वंशज घोषित किया।
3. जिल्लेलाही नियावत ए खुदाई की उपाधि धारण की।
4. सिजदा (झुककर प्रणाम) (पैर चूमना) प्रथा का आरंभ।
5. ईरानी शासन की भांति नवरोज उत्सव का आरंभ कराया।
6. नृत्य संगीत, मद्यपान पर प्रतिबंध लगा दिया।
7. रक्त एवं लौह की नीति का प्रतिपादन करते हुए विरोधियों का क्रूर दमन किया।

34. खिल्जी क्रांति पर टिप्पणी लिखिए।

जलाउद्दीन फिरोज खिलजी का इल्बरी वंश की शासन नियमों के विरुद्ध शासक बनने को इतिहासकारों ने खिल्जी क्रांति कहा है।

1. उसने सर्वप्रथम नस्लवाद के विरुद्ध योग्यता आधारित पद प्राप्त किया।
2. फिरोज का अमीर उलेमा, खलीफा, की स्वीकृति के बिना राजपद प्राप्त करना।
3. सर्वप्रथम विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के विरुद्ध निम्नवर्गीय मुस्लिमों का शासन स्थापित हुआ।
4. फिरोज खिल्जी ने बिना किसी धार्मिक समर्थन के शासन किया।
5. वह राज्य के शरियत नियमों से तटस्थ था।
6. राजत्व में उपरोक्त परिवर्तन होने के कारण खिल्जी शासन का आरंभ खिल्जी क्रांति के रुप जाना गया।

35. अलाउद्दीन के सैन्य सुधारों का उल्लेख कीजिए

1. उसने सर्वप्रथम स्थायी सेना गठन किया, ताकि जागीरदारों की सेना पर निर्भरता खत्म हो सके।

2. सेना को नगद वेतन देने की व्यवस्था आरंभ की जिसके तहत प्रत्येक सैनिक का वेतन 234 टंका प्रतिवर्ष निर्धारित किया।
3. सेना का केन्द्रीयकरण कर दिया जिसके तहत सेना का संपूर्ण नियंत्रण केन्द्र के अधीन था।
4. सैनिकों के हुलिया रखने की तथा घोड़ा दागने की प्रथा का प्रचलन करवाया ताकि पहचान सुनिश्चित हो सके।
5. योग्यता आधारित सीधी सैन्य भर्ती करते हुए 4 लाख 75 हजार सैनिकों की विशाल सेना गठित की।
6. मंगोल दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते हुए 10, 100, 1000 सैनिकों पर सैन्य नेतृत्वकर्ता का गठन किया। इस प्रकार अपने सैन्य का सुधारों के माध्यम में मंगोल सुरक्षा काा अन्य आंतरिक बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा मे सफल रहा।

36. अलाउद्दीन के राजस्व सुधारों का उल्लेख करें।

1. अपने राजस्व सुधारों के तहत सर्वप्रथम उसने दीवान–ए–मुस्तखराम नामक राजस्व विभाग का राजस्वों किया जो समस्त कर राजस्वों का नियमन व नियंत्रण करता था।
2. उसने भू–राजस्व की दर उपज के एक तिहाई से बढ़ाकर दो तिहाई कर दी।
3. उसे दो नवीन कर लागू किए–
   - **I.** चराई कर– यह दुधारु पशुओं पर कर था।
   - **II.** घराई कर– यह घर पर लगाया गया कर था।
4. उसने लूट से प्राप्त धन खुम्स में राज्य का हिस्सा 1/5 भाग से बढ़कर 4/5 भाग कर दिया।
5. अलाउद्दीन ने गैर मुसलमानों से जजिया व मुसलमानों पर 2.5% जकात कर कर निर्धारण।
6. अलाउद्दीन ने राजस्व कर अनाज व नकद दोनों की रुपों में अदा करने की व्यवस्था की तथा मध्यस्थों को कर वसूलने के कार्य से हटाकर सीधा जनता से कर लिया।
   इस प्रकार उसने एक उत्कृष्ट भू–राजस्व व्यवस्था को लागू किया।

37. अलाउद्दीन की बाजार नियंत्रण प्रणाली का वर्णन करें।

अलाउद्दीन बाजार नियंत्रण प्रणाली बरनी की तारीख ए फिरोजशाही में वर्णित है: जिसे निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया गया था

1. **मूल्य निर्धारण:** खाद्यान्न, वस्त्र, मवेशी, आदि दैनिक उपभोग की वस्तुओं के मूल्य निश्चित कर दिए गए थे।
2. **बाजार स्थापना:** 3 संगठित बाजारों की स्थापना की गई:
   प्रथम : गल्ला मंडी, यह अनाज मंडी थी।
   यह शहना ए मंडी के अधीन थी इसमें माल बेचने हेतु व्यापारी पंजीकरण अनिवार्य था।।
   द्वितीय: सराय–ए–अदल
   यह वस्त्र, चीनी, घी, जड़ी–बूटी बाजार था। जिसमें वस्तुओं को पूर्व निर्धारित मूल्य पर बेचा जाता था। इस बाजार में विदेशों से आयात हेतु सब्सिडी व्यवस्था थी। यह परवाना नवीस नामक परमिट अधिकारी के अधीन थी।
   तृतीय: मवेशी व दास बाजार इस बाजार में घोड़े, बैल, दास–दासियों की बिक्री की जाती थी। यह बाजार मध्यस्थों से मुक्त था, इसमें बरीद नामक बाजार निरीक्षक की नियुक्ति की गई थी।
3. **कठोर मूल्य नियंत्रण बाजार:** कम तौलने, महँगा, बेचने पर शरीर से मांस निकालने जैसे दंड का प्रावधान किया गया था।
4. **आपातकालीन अन्न भंडार:** अकाल, युद्ध आदि के दौरान, बाजार में अन्न आपूर्ति बनाए रखने हेतु आपातकालीन अन्न भंडार, की स्थापना की गई थी।
5. **बाजार नियंत्रण विभाग:** दीवान ए रियासत विभाग की स्थापना की गई जो संपूर्ण बाजार प्रणाली पर नियंत्रण रखता था।

इस प्रकार अलाउद्दीन खिल्जी अपनी बाजार नीति के माध्यम से विशाल सेना का संगठन कम मात्रा में करने तथा मूल्यवृद्धि को रोकने में सफल रहा।

38. बाजार नियंत्रण प्रणाली के क्या प्रभाव हुए।

सकारात्मक प्रभाव:

1. भ्रष्ट्राचार में कमी आई तथा राजकोष में वृद्धि हुई।
2. विशाल सेना का संगठन कम वेतन दरों पर किया जा सका।
3. मंगोल आक्रमण से सुरक्षा एवं आंतरिक विद्रोह दबाए जा सके।
4. मिलावट, कालाबाजारी नियंत्रण एवं वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि हुई।
5. अनावश्यक मूल्यवृद्धि में नियंत्रण स्थापित हुआ तथा आमजन को सस्ती वस्तुओं की प्राप्ति हुई।
6. कृषकों को नियमित आय सुनिश्चित हुई क्योंकि हर अनाज के दाम पूर्वनिर्धारित थे।

नकारात्मक प्रभाव:

1. सीमित क्षेत्र में लागू दिल्ली के आसपास अधिकांश क्षेत्रों में प्राचीन पद्धतियाँ जारी थी
2. व्यापारी निर्धारित कीमत पर वस्तु बेचने को बाध्य अत: मुनाफ कम।
3. किसानों पर दोहरी मार क्योंकि 50 प्रतिशत राजस्व के साथ राज्य द्वारा निर्धारित मूल्य पर अनाज बेचना पड़ता था।
4. हालांकि व्यवस्था के सकारात्मक परिणाम ज्यादा थे तथा यह अपने समकालीन बड़े आर्थिक सुधारों में से एक थी।

39. अलाउद्दीन के दक्षिण विजय अभियान का वर्णन करें

- वह दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने दक्षिण भारत को जीतने का प्रयास किया।
- अलाउद्दीन के दक्षिण की ओर रुख करने का उद्देश्य साम्राज्य विस्तार तथा शासन हेतु धन की प्राप्ति करना था।
- उसने दक्षिण के निम्न राज्यों पर आक्रमण किए—

1. **वारंगल पर आक्रमण:** अपनी दक्षिण विजय नीति का आरंभ उसने 1302 ई. में वारंगल के शासक प्रताप रुद्र देव पर आक्रमण के साथ किया किन्तु वह असफल रहा। अत: 1308–09 ई में उसने पुन: मालिक काफूर के नेतृत्व में सेना भेजी जिसमें प्रताप रुद्र देव पराजित हुए और अधीनता स्वीकार के साथ प्रसिद्धद कोहिनूर हीरा मालिक काफूर को प्रदान किया।
2. **देवगिरी आक्रमण:** 1303 ई में उसने मालिक काफूर के नेतृत्व देवगिरी के शासक रामचन्द्र को पराजित किया। यद्यपि उसने देवगिरी का शासन उसे वापस सौंप दिया। 1309–10 ई. में रामचन्द्र की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शंकरदेव ने स्वंय घोषित कर लिया। अत: 1313 ई. में मालिक काफूर ने पुन: देवगिरी पर आक्रमण कर शंकरदेव का वध कर दिया औश्र देवगिरी पर अधिकार कर लिया।
3. **होयसल राज्य विजय:** 1310 ई में मालिक काफर के नेतृत्व में होयसल शासक वीर बल्ला को पराजित कर होयसल पर अधिकार कर लिया।
4. **पाड्य राज्य विजय:** उसने पांण्ड्य राज्य में गृहयुद्ध का फायदा उठाते हुए मालिक काफूर के नेतृत्व में 1311 ई. में पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण कर वीर पाण्ड्य को पराजित किया। इस प्रकार यद्यपि उसने दक्षिण पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित नहीं किया किन्तु दक्षिण का अधिकांश भाग उसके अधीन हो गया।

40. अमीर खुसरों पर टिप्पणी कीजिए।

- अमीर खुसरों का जन्म दिल्ली सल्तनत के अधीन पटियाली में 1253 ईसवी में हुआ था इनका वास्तविक नाम अबुल हसन यामीन उद्दीन खुसरों था।

- यह प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया की शिष्य थे। यह सूफी संगीतज्ञ होने के साथ–साथ गजल कव्वाली जैसी संगीत विधाओं के जनक माने जाते है।
- इन्होंने सितार एवं तबला संगीत वाद्य यंत्रों का अविष्कार किया।
- यह बलबन से लेकर मोहम्मद बिन तुगलक तक दिल्ली सल्तनत के लगभग 7 शासकों के दरबार में रहे। इन्हें तूतयी ए हिंद अर्थात् भारत का तोता की संज्ञा दी जाती है।

41. मुहम्मद बिन तुगलक के प्रसिद्ध सुधारो का वर्णन करें।

इसके 5 प्रसिद्ध असफल सुधार निम्न है जिनके कारण उसे पागल व सबकी की संज्ञा दी गई है।

1. दोआब कर वृद्धि (1325):

- कु. तुगलक ने दोआब क्षेत्र 50 प्रतिशत की भूराजस्व वृद्धि की।
- यह वृद्धि पूर्व की 20 गुना थी। **(बरनी के अनुसार)**
- यह वृद्धि पूर्व की 4 गुना थी। **(फरिश्ता के अनुसार)**

किन्तु दुर्भाग्य से इसी वर्ष अनावृष्टि पड़ने के कारण कृषकों का विद्रोह आरंभ हो गया जिसका अधिकारियों के क्रूर दमन किया जिससे जन असंतोष में वृद्धि हुई और यह अभियान असफल रहा।

2. राजधानी परिवर्तन (1326):

- राजधानी दिल्ली से दौलताबाद **(देवगिरी स्थान)** स्थानांतरिक की जिसका उद्देश्य दक्षिण राज्यों का प्रशासन सुचारु रुप से संचालित करना था।
- अत: वह जनता को बलपूर्वक दौलताबाद ले गया जिससे अधिकांश जनता की मार्ग में ही मृत्यु हो गई। दौलताबाद से प्रशासन संचालन में पुन: कठिनाई आने से उसने पुन: राजधानी दिल्ली स्थानांतरित की जिससे भारी जन–धन की हानि हुई और उसकी अदूरदर्शिता के कारण यह योजना भी असफल रही।

3. सांकेतिक मुद्रा प्रचलन (1329):

An Institute for MPPSC Examination

- चांदी सोने की मुद्रा के मूल्य के ताँबे के सिक्के चलाए। (छद्म मुद्रा प्रचलन)

जिसका उद्देश्य: बहुमूल्य धातुओं का निर्गमन रोकना तथा खाली राजकोष को भरना। (राजधानी परिवर्तन के कारण भारी राजस्व)

- तांबा सर्वसुलभ व सस्ता होने के कारण जनता ने घरों में सिक्के बनाना प्रारंभ कर दिया जिससे भारी मात्रा में अवैध मुद्रा प्रचलन हो गया।
- **MBT** : नकली सिक्कों के बदले जनता को सोने चाँदी के सिक्के दे दिए। जिससे भारी धन हानि हुई राजकोष और खाली हो गया।

4. खुरासान अभियान (1329):

- मध्य एशिया में राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाने हेतु खुरासान विजय की योजना बनाई।
- इसने तहत 3 लाख 70 हजार सैनिको की नई सेना बनाई तथा सेना को अग्रिम वेतन दे दिया।
- किन्तु मध्य एशिया में पुन: राजनीतिक स्थिरता स्थापित हो जाने के कारण सेना भ्रंश करनी पड़ी।
- अग्रिम के रुप में वेतन देने से राजकोष को भारी हानि हुई अत: संपूर्ण योजना विफल रही।

5. कराचित्र अभियान (1332): कुमायूँ पहाड़ी के कराचित्र में नियंत्रण हेतु खुसरो मालिक के नेतृत्व में 1 लाख की सेना भेजी।

जिसका उद्देश्य : पहाड़ी राज्यों पर नियंत्रण स्थापित कर विद्रोहियों की शरणस्थली खत्म करना था।

- विद्रोहियों की शरणस्थली खत्म करना।

- सुल्तान का लक्ष्य चीन पर आक्रमण था —फरिश्ता
- किन्तु सदी बर्फीले तूफान, प्लेग से सारी सेना नष्ट केवल 3 सैनिक बचे।
- परिणाम: आर्थिक व सेना की हानि हुई और सेना में असंतोष व्याप्त हो गया तथा यह अभियन थी असफल रहा।
- यद्यपि वह विद्वान व योग्य था किन्तु परिस्थिति जन्य कारणों अदूरदर्शिता प्रशासनिक कमी के कारण समस्त सुधार विफल रहे।

42. मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं के असफलता के कारण लिखिए?

1. योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन न कर पाना।
2. आधारभूत समस्याओं की जानकारी न होना।
3. प्रतिकूल आकस्मिक परिथितियों का उत्पन्न होना।
4. उलेमा कट्टरपंथियों द्वारा सुल्तान के विरुद्ध जनता में दुष्प्रचार करना।
5. योजनाओं का समय से आगे की थी अत: जनता की समझ से परे थी
6. योग्य परामर्श दाताओं का अभाव था।
7. भ्रष्ट अधिकारी वर्ग का होना दोआब में कृषकों को क्रूर दमन से यह सिद्ध होता है कि अधिकारी असंवेदनशील व भ्रष्ट थे।
8. सुल्तान की फिजूलखर्ची उसकी असफलता का कारण बनी लेनपूल मानता है कि चूँकि उसके मुक्त हाथ से धन खर्च करने के कारण योजनाओं के बेहतर क्रियान्यन हेतु धन की कमी हो गई।

43. मुहम्मद बिन तुगलक पागल, सनकी, रक्त पिपासु था। कथन का परीक्षण कीजिए।

- जियाउद्दीन बरनी ने उसकी सुधार योजनाओं की असफलता के कारण उसे पागल सनकी रक्तविवाह की संज्ञा दी है।
- किन्तु सुल्तान की नीतियों की असफलता उसकी सनक व अव्यावहारिक सोच के कारण नहीं बल्कि न होने के कारण हुई।
- साथ ही वह दिल्ली सल्तनत का सबसे सुनिश्चित व विद्वान शासक था।
- इसके अलावा उसमें धर्माधता, कट्टरता, संकीर्णता का अभाव था।
- नि:संदेह वह मध्यसुना के सुल्तानों में योग्यता था। साथ ही व न्यायप्रिय व दानशील था।
- अत: उसे पागल, सनकी, रक्तपिपासु की संज्ञा देना पूर्णत: अनुचित है।

44. मुहम्मद बिन तुगलक का दक्षिण अभियान उसकी एक बड़ी भूलों में से एक थी। सिद्ध कीजिए?

- मुहम्मद बिन तुगलक एक महात्वाकांक्षी शासक था। उसने सुदूर दक्षिण के होयसल पांड्य वंशों के राज्यों को विजित कर लिया।
- उसने दक्षिण के कुछ राज्यों को छोड़कर शेष सभी पर अधिकार कर लिया।
- इस अनुचित साम्राज्य विस्तार का परिणाम यह हुआ कि विस्तृत साम्राज्य का संचालन कठिन हो गया। दिल्ली से सुदूर दक्षिण तक प्रशासन नियंत्रण करना मुश्किल कार्य था।
- परिणामत: साम्राज्य का विघटन आरंभ हो गया जिससे 1335 में मदुरै 1336 में विजयनगर, 1338 में बंगाल, 1347 में बहमती।
- ये समस्त राज्य स्वतंत्र हो गए। अंतत: दिल्ली सल्तनत का पतन हो गया।

45. फिरोजशाह के सार्वजनिक निर्माण कार्यो का उल्लेख करें।

1. उसने फिरोजाबाद जौनपुर, फतेहाबाद, हिसार, फिरोजपुर, नगर बसाए।
2. उसने 200 काफिला सरायों का निर्माण कराया।
3. वह प्रथम शासक था जिसने लोकनिर्माण विभाग की स्थापना की।
4. सिंचाई सुविधा हेतु 5 बड़ी नहरों का निर्माण कराया जिनमें (सबसे बड़ी नहर 200 किमी) लंबी थी।

5. दिल्ली में फिरोजाशाह कोटला दुर्ग का निर्माण।
6. उसने अपने शासनकाल में 100 पुलों का निर्माण कराया। फिरोजशाह के निर्माण कार्यो के कारण उसकी तुलना आगस्टस से की जाती है।

46. फिरोजशाह तुगलक के लोककल्याणकारी कार्यो का उल्लेख करे

या

सिद्ध कीजिए कि वह सल्तनत काल का प्रथम शासक था जिसने लोककल्याण पर विशेष ध्यान दिए।

लोककल्याण संबंधी निम्न कार्य किए—

1. दीवान—ए—इस्तिहाक की स्थापना—
   यह पेंशन विभाग था। जो
   मृत सैनिकों के वेतन भत्ते कल्याण का कार्य हेतु उत्तरदायी था।
2. दीवान ए—बंदगान—
   यह दास विभाग था जो कि
   लगभग 2 लाख गुलामों कल्याण हेतु कार्य करता था।
3. दीवान—ए—खैरात
   यह दान विभाग था जो
   असहाय, निर्धन, विधवा मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक सहायता हेतु उत्तरदायी था।
4. रोजगार कार्यालय स्थापना—
   यह बेरोजगार सूची निर्माण करके राज्य में रोजगार की स्थिति का आंकलन करता था तथा बेरोजगार युवाओं को रोजगार सहायता उपलब्ध कराता था।
5. दर—उल—सका
   यह राजकीय चिकित्सालय था जहाँ नि:शुल्क औषधि व चिकित्सा सुविधा उपलब्ध थी।
6. उसने अमानवीय सजा जैसे नाक, कान, काटने माँस निकालने जैसी खाना पर रोक लगा दी।
7. कृषक ऋणों को माफ कर दिया तथा कृषक कल्याण हेतु सिंचाई सुविधा हेतु नहरों का निर्माण करया।
   उपरोक्त लोककल्याणकारी कार्यो के कारण उसे सल्तनत काल का प्रथम लो. ककल्याणकारी शासक कहते है।

47. तैमूर आक्रमण के दौरान भारत की राजनीतिक परिस्थितयों का वर्णन करे।

1. फिरोज तुगलक के बाद से ही साम्राज्य का पतन आंरभ हो चुका था।
2. 1388—1394 के मध्य के सभी शासक अयोग्य
3. अमीरों का षड़यंत्र आरंभ हो चुका था।
4. आंतरिक विद्रोहो का दौर आरंभ हो गया था जिन्हे दबाने हेतु तुगलक शासक जूझ रहे थे।
5. नासिरुद्दीन महमूद का शासन तुगलक वंश का अंत साबित हुआ।
6. तैमूर आक्रमण के बाद दिल्ली सल्तनत का बचा वैभव समाप्त हो गया और इस वंश का पतन हो गया।

48. तैमूर आक्रमण के भारत पर क्या प्रभाव पड़े?

1. भारत से अकून संपत्ति लूटकर समरकंद ले गया।
2. दिल्ली नगरी पूर्ण रुप से उजड़ गई।
3. हिन्दू मुस्लिम वैमनस्यता से वृद्धि जनता का कत्लेआम।
4. नसिरुद्दीन महमूद की हार

5. तुगलक वंश का पतन
6. नुसरतशाह का दिल्ल पर अधिकार
7. भारतीय कला को भूति (ऐतिहासिक इमारत विध्वंस)
8. खिज्र खाँ द्वारा सैयद वंश की नींव

इस प्रकार तैमर आक्रमण के महत्वपूर्ण व व्यापक प्रभाव पड़े।

49. सिकंदर लोदी की आंतरिक शासन नीति का वर्णन करें।

या

उसने शासन की आंतरिक चुनौतियों का सामाना कैसे किया।

1. उसने अपने सिंहासन रोहण (11 जुलाई 1489) के एक वर्ष के भीतर ही चाचा आलम खाँ, ईशा खाँ हुमायूँ, तातर खाँ को पराजित कर दिया।
2. बारबल शाह (जौनपुर) के साथ संधि व दमन की नीति का पालन किया।
3. उसने अमीरों पर कठोर प्रतिबंध लगाए ताकि वे शासन के विरुद्ध संगठित न हो सके।
4. उसने आंतरिक विद्रोहों का सामना करते हुए गुप्तचर प्रणाली का पुर्नगठन किया।
5. अपने सैन्य अभियानों के तहत बंगाल व विंध्य पर अधिकार कर लिया।

इस प्रकार उसने अपने शासन को सुदृढ करते हुए लगभग 19 वर्ष शासन किया

50. पानीपत — I के प्रमुख घटनाक्रम का वर्णन करे, इसके क्या परिणाम हुए।

या

पानीपत के प्रथम युद्ध पर टिप्पणी कीजिए।

- इब्राहिम लोदी की निरंकुशता के कारण अमीरों व सूबेदारों के विद्रोह
- पंजाब के सूबेदार दौलतखाँ द्वारा काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण का आमंत्रण
- 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के प्रसिद्ध
- मैदान में बाबर व इब्राहिम लोदी के मध्य युद्ध
- बाबर द्वारा तोपखाने व आधुनिक युद्ध तकनीक का प्रयोग
- परिणाम: बाबर विजयी रहा।
  - दिल्ली सल्तनत पर अधिकार
  - नवीन मुगल वंश की स्थापना।

51. सल्तनत कालीन सामाजिक दशा का वर्णन करे।

1. समाज हिन्दू व मुस्लिम वर्ग में विभक्त।
2. मुसलमानों में तुर्क मुसलमान विशेषाधिकार प्राप्त।
3. समाज में आमीर नायक वर्ग उच्च पद प्राप्त वर्ग कुछ शासकों ने हिन्दुओं को भी इसमें शामिल
4. उलेमा वर्ग शरियत शासन स्थापना हेतु उत्तम (धर्म गुरु)
5. समाज में स्त्री दशा दयनीय थी। (बहुविवाह पर्दा प्रथा सतीप्रथा का प्रचलन)
6. समाज में दास प्रथा का प्रचलन। (हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही वर्गो के दास थे)
   इन्हे बाजार खरीदा व बेचा सकता था।
7. रसायन में कृषक वर्ग में हलवाह (भूमिहीन या व खुदकारत (अपनी भूमि पर कृषि करने वाला) किन्तु दोनों की ही स्थिति दयनीय थी।
8. समाज में शिल्पकार चर्मकर्म, पहरेदार के कुछ वर्ग अछूत माने जाते थे।

सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था,प्रशासन तथा संस्कृति

52. सल्तनत कालीन अर्थ व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

1. सल्तकालीन आर्थिक नीति इनकी विचारधारा के वित्तीय सिद्धांत पर आधारित थी।

2. करों को धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष दो भागों में विभाजन कर व्यवस्था:

3. कर व्यवस्था

- उश्र: मुस्लिमों से भूमिकर
- स्वराज: गैर मुस्लिमों से भूमिकर (1/3 से 1/2 भाग)
- खम्स: लूट गड़े धन पर कर (1/5 से 4/5 भाग)
- जकात: मुस्लिमों पर धार्मिक कर 2.5%
- जाजिया: हिन्दुओं पर धार्मिक कर 2.5% (स्त्री, बच्चे, भिखारी, पुजारी को छूट)
  (स्त्री बच्चे भिखारी पुजारी को छूट)
- हक ए शर्ब: सिंचाई कर उत्पादन का 10%

4. अलाउद्दीन व मुहम्मद तुगलक ने भूमि पैमाइश के आधार पर कर निर्धारण किया।

5. मुहम्मद तुगलक ने इक्ता व्यवस्था के तहत सभी राजस्व अधिकार वली–उल–खराज नामक अधिकारी को दिए।

6. मुहम्मद तुगलक द्वारा सर्वप्रथम तकाबी ऋण का प्रावधान कृषकों हेतु किया गया।

53. कृषि में उन्नति हेतु सल्तनतकालीन शासकों के प्रयास लिखिए।

या

सल्तनत कालीन कृषि व्यवस्था पर टिप्पणी लिखिए।

1. इस समय द्विफसली कृषि के साथ बागवानी फसले प्रचलित।

2. इक्तेदारी प्रणाली द्वारा कृषि भूमि में विस्तार किया गया।

3. कृषि उन्नति हेतु मुहम्मद बिन तुगलक थे। नामक कृषि विभाग व कृषि ऋण की व्यवस्था की।

4. ग्यासुद्दीन व फिरोजशाह ने नहर व्यवस्था पर विशेष बल दिया।

5. इस समय सिंचाई की वैकल्पिक तकनीक रहट प्रणाली का प्रयोग भी सिंचाई हेतु किया जाता था।

6. भू–राजस्व के मापन हेतु भूमि पैमाइश की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया गया। इस प्रकार कृषि में तकनीकी व वैज्ञानिक विधि प्रयोग के कारण उत्पादन से वृद्धि हुई जिससे राजस्व संग्रहण में भी वृद्धि हुई।

54. मध्यकालीन औद्योगिक विकास पर टिप्पणी कीजिए।

1. वस्त्र उद्योग:

- 13 वीं 14 वी सदी में चरखे का प्रचलन।
- रेशमी व सूती वस्त्र उद्योग से वृद्धि।
- बंगाल बनारस मालवा, खंभात यह वस्त्र ।

2. धातु प्रयोग:

- सोना, चाँदी, तांबा पीतल, कांसा लोहा धातु से निर्मित वस्तुएँ (बर्तन, आभूषण आदि।)
- गुजरात, आभूषण निर्माण व इक्काशी हेतु।

3. चीनी उद्योग:

- इस समय चीनी उद्योग उन्नत अवस्था में जिसका केन्द्र बंगाल था।

4. चर्म उद्योग:

- चर्म उद्योग का केन्द्र सौराष्ट्र प्रदेश था।

5. कागज उद्योग:

- दिल्ली व गुजरात कागज उद्योग हेतु प्रसिद्ध थे।

55. सल्तनतकालीन में व्यापार वाणिज्य की स्थिति की विवेचना करे।

1. आंतरिक व बाह्य दोनों व्यापार प्रचलित थे।
2. जल व स्थल दोनो ही मार्ग से व्यापार होते थे।
3. देश के विभिन्न भागों को व्यापार कर हेतु चौकियाँ स्थापित थी (ताबकाते नासिरी में वर्णित)
4. दिल्ली थट्टा, देवल अन्हिलवाद, वाराणासी, सोनार गाँव प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।
5. देवगिरी रत्नों के व्यापार हेतु प्रसिद्ध था।
6. बंगाल से चावल व रेशम बनारस साडी सतगाँव से रेशमी रजाई, आगरा से नील का उत्पादन व निर्यात किया जाता था
7. भारत के मसाले, जड़ी बूटियों, हाँथी दाँत, की विदेशों में बड़ी माँग थी।
8. कलीकट व भडौच प्रसिद्ध बंदरगाह थे।

इस प्रकार व्यापार वाणिज्य अपनी उन्नत अवस्था में था।

56. सल्तनतकालीन केन्द्रीय प्रशासन पर टिप्पणी कीजिए।

- केन्द्रीय प्रशासन का प्रमुख सुल्तान था।
- सुल्तान सेना, न्याय आदि का प्रमुख
- सुल्तान की सहायता हेतु केन्द्रीयस्तर पर निम्न विभाग व अधिकारी वर्ग थे।

प्रमुख विभाग	विभाग प्रमुख
▪ दीवान—ए—विजारत	वजीर (प्रधानमंत्री)
▪ दीवान—ए—रसालत	सद्र—उस—सूद्र (धार्मिक सहायता)
▪ दीवान—ए—ईशा	दबीर—ए—सामाजिक (पत्राचार विभाग)
▪ दीवान—ए—अर्ज	आरिज —ए—सामाजिक (सैन्य विभाग)
▪ दीवान—ए—सुस्तस्वराज्य	राजस्व विभाग
▪ दीवान—ए—अमीर कोठी	कृषि विभाग
▪ दीवान—ए—खैरात	दान विभाग
▪ दीवान—ए—इश्तिहाक	वेतन विभाग
▪ दीवान—ए—वंदगान	दास कल्याण विभाग

57. सल्तनतकालीन प्रांतीय प्रशासन पर टिप्पणी कीजिए।

1. सल्तनतकालीन केन्द्र प्रांतों में विभक्त था, एवं प्रांतों को क्रमश: शिक व परगनों में बाँटा गया था।
2. प्रांत का प्रमुख सूबेदार होता था जो प्रांतीय प्रशासन व्यवस्था हेतु जिस अधिकारी थे।
3. सूबेदार की सहायता सद्र शिकदार (शिक का प्रमुख)
   प्रातीय आरिज (सैन्य प्रमुख) अमिल (परगना प्रमुख)
4. प्रांतीय प्रशासन पर केन्द्र का पूर्ण नियंत्रण था।
5. गुप्तचर प्रांतीय शासन की जानकारी सीधे सुल्तान तक पहुँचा सकते थे

58. सल्लनतकालीन न्याय प्रशासन का वर्णन करे।

- सुल्तान न्याय व्यवस्था में सर्वोच्च था।
- दीवान ए कजा मानसिक न्याय विभाग था। जो न्याय संबंधी मामलों हेतु उत्तरदायी था।
- काजी उल कजात् मुख्य न्यायाधीश होता था। जो दीवानी व फौजदारी दोनो का ही प्रमुख था।

- इसकी सहायता हेतु काजी व मुक्ती नामक न्यायाधिकारी होते थे।
- उलेमा वर्ग न्यायिक परिधि से बाहर था किन्तु मुहम्मद तुगलक ने उलेमा वर्ग को न्यायिक परिधि में लाकर समान न्याय की स्थापना की।
- इस प्रकार सल्तनत काल में निष्पक्ष व त्वरित न्याय को वरीयता दी गई।

59. सल्तनत कालीन सैन्य प्रणाली पर टिप्पणी कीजिए।

- सल्लनतकालीन सैन्य व्यवस्था तुर्क मंगोल पद्धति पर आधारित थी।
- इल्तुतमिश के काल से सैन्य व्यवस्था का शुभारंभ होता है।
- सेना के प्रमुख अंग:
  1. घुड़सवार सेना
  2. गज सेना
  3. पैदल सेना
  4. नौ सेना

सेना का स्तरीय वर्गीकरण

- दृश्य—ए—कत्ल — केन्द्रीय सेना
- दृश्य —ए—अतरक — प्रांतीय सेना
- सवार—ए—कत्ल — शाही घुड़सवार
- शम्सी घुड़सवार — सुल्तान की व्यक्तिगत सेना
- संपूर्ण सेना का सवोच्च नियंत्रक दीवान ए आरिज होता था। (सैन्य विभाग)

60. सल्तनतकालीन शासकों द्वारा किए गए प्रमुख सैन्य सुधारों का उल्लेख करें

1. इल्तुतमिश ने सेना की व्यवस्था हेतु इक्ता प्रणाली का आरंभ किया।
2. अलाउद्दीन खिल्जी ने विशाल सैन्य संचालन हेतु बाजार सुधार किए।
3. खिल्जी ने घोड़ा दागने की प्रथा व सेना के हुलिया रखने की प्रथा आरंभ की।
4. खुसरो शाह ने किराए पर सेना की व्यवस्था आरंभ की।
5. ग्यासुद्दीन तुगलक के सैन्य रजिस्ट्रर की व्यवस्था आरंभ की।
6. सल्तनतकाल में ही पत्थर व आना की मशीन मगरलि तथा अरौदा का अविष्कार हुआ। इस प्रकार सल्तनतकालीन शासकों ने सेना में नवीन सुधार को लागू किया।

61. इक्ताप्रणाली पर टिप्पणी लिखिए।

- इक्ता जागीरे होती थी जो आमीरों या सैन्य अधिकारियों को उनकी सेनाओं के बदले प्रदान किए जाते थे।
- इस प्रणाली का आरंभ इल्तुतमिश ने किया।
- इक्ता प्राप्त वर्ग इक्तेदार कहलाता था।
- ये इक्ता भूमि पर कृषि कराने व राजस्व संग्रहण हेतु उत्तरदायी थे।
- प्राप्त राजस्व का कुछ भाग सैन्य व स्वंय के खर्चे हेतु रखकर बाकी भाग केन्द्रीय राजस्व में जमा कराना होता था।
- आरंभ में इक्ताप्रणाली स्थानांतरणीय थी।
- फिरोजशाह तुगलक ने इक्ता प्रणाली के आनुवांशिक बना दिया।

62. सल्तनतकालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डालिए।

1. इस्लाम व भारतीय शैली का सम्मिश्रण।
2. भारतीय स्तंभों के साथ इस्लामी मेहराबों का प्रयोग

3. भवन निर्माण में पत्थरों व ईंटो का प्रयोग जिन्हें जोड़ने हेतु चुने का प्रयोग किया जाता था।
4. सजावट हेतु ज्यामितीय आकृतियों कलश, घंटी आदि का प्रयोग।
5. शिखर में गुंबद का प्रयोग।

सल्तनतकालीन स्वतंत्र प्रांतीय राजवंश

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

63. जैन–उल–याबदीन

- यह 1420 में काश्मीर का शासक बना इसकी धार्मिक सहिष्णुता के कारण इसे कश्मीर के अकबर की संज्ञा दी गई।
- इसने महाभारत व राजतंरगिणी का फारसी अनुवाद कराया था।
- का निर्माण करवाया।

64. राजा कुंभा

- मेवाड़ के राजपूत शासक थे।
- 1438 ई. में चित्तौड़ में कीर्ति स्तंभ का निर्माण कराया।
- मेवाड़ में 36 किलों का निर्माण कराया।
- वे कुशल वीणा वादक व महान संगीतकार थे।

65. राणा सांगा

- मेवाड़ के राजपूत शासक थे।
- इनका नाम संग्रामसिंह था।
- इन्होंने घटोली युद्ध (1517 ई.) में दिल्ली शासक इब्राहिम लोदी के पराजित किया।
- 1527 ई. खानवा युद्ध में बाबर से पराजित हुए।

5 □□ों □□प्रश्नोत्तर

66. सल्तनत कालीन बंगाल पर टिप्पणी लिखिए।

- दिल्ली से बंगाल की भौगोलिक स्थिति व प्राकृतिक विभिन्नता के कारण, बंगाल ने सदैव दिल्ली से स्वतंत्र होने का प्रयास किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल पर अपना अधिपत्य बनाए रखने के लिए उस पर नियंत्रण बनाए रखा।
- मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में 135 ई में फखरुद्दीन मुबारकशाह ने स्वंय को सुल्तान घोषित कर बंगाल को एक स्वतंत्र राज्य बनाया।
- इलियसशाह ने लखनौती और सोनागाँव पर उल्का किया।
- इसने अपने राजस्व का विस्तार पश्चिम में विहत से चम्पारण और गोरखपुर एवं अंतत: बनारस तक किया।
- 1350 में इसने नेपाल को जीत लिया।
- 1353 ई में फिरोज तुगलक ने इलियास के खिलाफ असफल अभियान छेडा। जिसके फलस्वरुप मैत्री संधि के द्वारा दोनों राज्यों की सीमा निर्धारित हुई।
- इलियास के उत्तराधिकारी सिंकदशाह ने अपने पिता की नीतियों को जारी रखा।

- इसी के शासनकाल में फिरोज तुगलक का दूसरा आक्रमण 1359 ई. में हुआ।
- इस वंश का सर्वाधि प्रसिद्ध सुल्तान ग्यासुद्दीन आजशाह था। यह अपनी स्वप्रियता के लिए विख्यात था इसने प्रसिद्ध मस्जिद अमीदा का निर्माण करवाया था।

67. सल्तनतकाली जौनपुर रियासत की विवेचना कीजिए।

- जौनपुर नगर की स्थापना किविज तुगलक ने मुहम्मद बिन तुगलक की संतति में की जो बाद में शर्की साम्राज्य की राजधानी बना।
- शर्की शासन में जौनपुर की उन्नति के कारण इसे भारत का शिराज कहा जाता है।
- तैमूर के आक्रमण से दिल्ली में फैली अस्थिरता का लाभ उठाकर 1344 मालिक सरवर से जौनपुर में एक स्वतंत्र शर्की राज्य की स्थापना की।
- सुल्तान मुहम्मदशाह तुगलक द्वितीय ने उसे एक मालिक उस शर्क (पूर्व का शिराज) तथा ख्वाजा–ए–जहाँ की उपाधि प्रदान की।
- मालिक–उश–शर्क की उपाधि के कारण ही यहाँ का राजवंश शर्की कहलाया।

68. सल्तनतकालीन मालवा पर टिप्पणी करे।

- मालवा अपने समृद्ध एवं उपजाऊ दोनो और अनुकूल जलवायु के कारण मालवा पर अधिकार करना हमेशा बहुमूल्य उपलब्धि माना जाता था।
- मालवा पर स्वतंत्र सल्तनत की स्थापना 1401 ई. में हुसैन खाँ सुरी ने की थी, जिसे फिरोज तुगलक ने दिलावर खाँ की उपाधि प्रदान की।
- हुसैन खाँ का पुत्र हुशंगशाह के नाम से शासक बना। उसने अपनी राजधानी माण्डू को बनाया।
- इसने सभी सम्प्रदायों के प्रति सहिष्णुता की उदार नीति अपनाई।
- मुहम्मदशाह ने (1436–1469) मालवा में खिल्जी वंश की नीव डाली यह योग्य शासक था। वह गुजरात के शासक अहमदशाह तथा मेवाड़ के शासक राणा उम्मा के समकालीन था।
- मिस्त्र के खलीफा ने सुल्तान स्वीकार किया था। मालवा व मेवाड़ युद्ध में दोनो शासकों ने अपनी अपनी विजय का दावा किया था।
- मेवाड़ के शासक ने इस युद्ध में विजय स्वरुप चित्तौड़ में विजय स्तंभ बनवाया जबकि महमूद खिल्जी ने माण्डू में सात मंजिलों वाला स्तम्भ बनवाया।

69. महमूद बेगड़ा पर टिप्पणी कीजिए।

- 1459–1511 के शासनकाल में (क्रास और क्रेसेंट) के युद्ध के लिए स्मरणीय है।
- उसने तुर्की, फ्रांस इत्यादि देशों से घनिष्ठ कूटनीतिक सम्बध बनाए।
- ठसने गिरिनार एवं चम्पानेर की पहाड़ियों को जीता।
- गिरिनार की तलहती में मुस्तफावार नामक नगर की स्थापना की।
- इन्ही से पहाड़ियों को जीतने के कारण इसे बेगड़ा की उपाधि मिली।
- इसने चम्पानेर के निकट एक विशाल बाग–ए–फिरदौस (स्वर्गिक उपतन) की स्थापना की।
- बहादुरशाह के काल में गुजरात की शक्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी।
- इसने 1531 में मालवा को जीतकर गुजरात में मिला लिया था।

70. कश्मीर का शासक जैनुल आबदीन धार्मिक सहिष्णुता की नीति का जीवंत उदाहरण है। कथन का परीक्षण कीजिए।

- जैनुल आबदीन उस परिस्थिति में शासक बना जब उसके (1430–1470 ई) उसके भाई सिकंदर शाह के क्रूर शासन से हिन्दू मंदि तोड़े गए। मूर्तिपूजा में प्रतिबंध लगा दिया गया।
- कश्मीरी ब्राम्हणों को घाटी छोड़कर जाने का आदेश दे दिया गया।
- किन्तु शासक बनते ही जैनुल आबदीन ने कश्मीरी ब्राम्हणों को पुन: घाटी आमंत्रित किया उसने मंदिरों की पुर्नस्थापना कर मूर्ति पूजा को बहाल कर दिया।
- उसने जाजिया और गौहला पर प्रतिबंध लगा दिया। उसने संस्कृति के क्षेत्र में हिन्दुस्तानी परंपरा को मजबूत किया, उसने फारसी, संस्कृत, कश्मीरी, तिब्बती भाषा साहित्य को प्रोत्साहन दिया साथ ही संगीत में भी उसकी विशेष रुचि थी।
- उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में वह एक विलक्षण शासक सिद्ध होता है उसने अपने 50 वर्षो के शासनकाल में सुशासन व सद्भाव का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।
- इसी कारण उसे कश्मीर का अकबर भी कहा जाता

विजय नगर साम्राज्य

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

71. हरिहर एवं बुक्क

- हरिहर एवं बुक्का ने 1336 ई में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- प्रारंभ में ये वारंगल में काकतीयों के सामंत थे।
- इन्होंने अनिगोण्डी को अपनी राजधानी बनाया।

72. देवराज प्रथम (1406–1422 ई)

- फिरोजशाह बहवी से युद्ध में पराजित।
- 1410 ई. में तुंगभद्रा पर बांध बनवाया।
- इसके दरबार में श्रीनाथ तथा हरविलासम थे।

73. निकोलोकोण्टी

- इतावली यात्री, जो 1420 में भारत आया।
- देवराय –I के शासनकाल में विजयनगर साम्राज्य यात्रा।
- इसने विजयनगर साम्राज्य के सामाजिक जीवन, तथा त्यौहारों का वर्णन अपने वृत्तान्त अपने वृतान्त में किया।

74. अब्दुर्रजाक

- फारस का यात्री 1442 ई. में भारत आया।
- देवराय–II के काल में विजयनगर यात्रा।
- अब्दुर्रजाक द्वारा संस्कृत के 2 महानाटकों–सुधानिधि तथा वादरायण के ब्रम्हसूत्र पर टीका की रचना की।

75. अष्टदिग्गज

- तुलुव वंश के महान शासक कृष्ण देवराय के दरबार में उपस्थित तेलगू के आठ महान विद्वान व कवि।
- कुछ अष्टदिग्गज — तेनाली रामकृष्ण, भट्टमूर्ति, पिंगली सूरव।

76. कृष्ण देवराय

- विजयनगर का महानतम शासक, जिसे बाबर ने सर्वाधिक शक्तिशाली शासक (भारत का) कहा।
- प्रमुख रचना—आमुक्तमाल्यप, जाम्बवती कल्याणम्।
- इसने हजारा मंदिर तथा विठ्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण किया।
- आंध्रभोज नाम से प्रसिद्ध, जिसके दरबार में अष्टदिग्गज।

77. सालुव वंश 1485-1505 ई

- सामंत नरसिंह सालुव ने 1485 में सालुव वंश की स्थापना।
- इसके काल में सोल, पाण्ड्य व चेरों को विजयनगर की प्रमुसत्ता स्वीकार करने हेतु बाध्य किया गया।
- 1505 ई. में वीर नरसिंह ने शासक की हत्या कर तुलुव वंश स्थापित किया।

78. तल्लीकोटा या बब्नीहड्डी का युद्ध

- 25 जनवरी 1565
- विजयनगर तथा (अहमदनगर, बीजापुर, गोलकंडा, बीदर) के मध्य हुआ।
- विजयनगर साम्राज्य का अंत माना गया।

An Institute for MPPSC Examination

79. नानु एवं वलनाडु

- विजयनगर साम्राज्य की प्रांतीय व्यवस्था का भाग।
- बलनाडु— कोट्टम या विजयनगर के जिले।
- नाडु— सरगना या तहसील जो वलनाडु के अंतर्गत थे।

80. डोमिंगो पायस

- पुर्तगाली यात्री 1515 ई. भारत आया।
- कृष्णदेवराय के शासनकाल में विजयनगर यात्रा पर आया।
- इसने कृष्णदेवराय के शरीर पर व्यक्तित्व का चित्रण किया है।
- इसने पशुबलि तथा वायंकर व्यवस्था का वर्णन किया है।

81. फर्नांडिस नूनिज

- पुर्तगाली यात्री 1535 ई. में आया।
- घोड़ो का व्यापारी, जो अच्युतदेवराय के काल में विजयनगर की यात्रा पर आया।
- इसने अपनी पुस्तक में तत्कालीन विजयनगर की अराजकता के माहौल एवं आंतरिक विद्रोह का वर्णन किया है।

82. सीजर फ्रेडरिक

- पुर्तगाली यात्री।
- लल्लीकोटा के युद्ध वे बाद विजयनगर साम्राज्य की यात्रा पर आया।
- इसने विजयनगर के विनाश का वर्णन किया है।

83. नायंकर व्यवस्था

- इस व्यवस्थ के अंतर्गत साम्राज्य की समस्त भूमि तीन भागों में विभाजित थी।
- विजयनगर में सेनानायकों को नायक कहा जाता था।
- नामंतर व्यवस्था की स्थापना विजयनगर शासकों द्वारा सामूहिक व्यापार तथा अश्व व्यापार पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए की गई थी।

84. आयंगर व्यवस्था

- विजनयनगर में ग्रामीण प्रशासन की महत्वपूर्ण विशेषता।
- शासन हेतु 12 शासकीय व्यक्तियों की नियुक्ति इस समूह को आयंगर कहते है।
- आयंगरों के पद आनुवांशिक
- विशेषता: भूमि द्वारा आय का विशेष आबंटन तथा निश्चित भुगतान पहली बार ग्राम्य सेवकों को किया गया।

85. अग्रहार

- विजयनगर साम्राज्य में अग्रहार विद्या के केन्द्र थे।
- अग्रहारों में मुख्यत: वेदों की शिक्षा दी जाती थी।
- प्रत्येक अग्रहार में ज्ञान की किसी विशेष शाखा में पारंगत ब्राम्हण होते थे।

5 □□ों □□प्रश्नोत्तर

86. विजयनगर साम्राज्य का परिचय दीजिए।

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर और बुक्का ने की।
- विजयनगर साम्राज्य के चार राजवंशों ने लगभग 300 वर्ष शासन किया।
  - **संगम वंश (1336–1485 ई.)**
    इसके संस्थापक हरिहर और बुक्का थे तथा राजधानी अनेकगोण्डी थी।
  - **सालुव वंश (1485–1505 ई.)**
    इस वंश के संस्थापक नरसिंह सालुव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विजयनगर को बनाई।
  - **तुलुव वंश (1505–1570 ई.)**
    तुलुव वंश के संस्थापक वीर नरसिंह थे। इनकी राजधानी बेनुगोण्डा थी।
  - **अरविन्द वंश (1570–1650 ई.)**
    इस वंश के संस्थापक निरुमाल थे। इन्होंने अपनी राजधानी चन्द्रगिरि को बनाया।

87. संगमवंश के संस्थापक के रुप में हरिहर और बुक्का के योगदानों की चर्चा करें।

- **हरिहर (1336–1356)**
  - यह राज्य का प्रथम शासक था जिसने अपनी राजधानी विजय नगर को बनाया। उसने बादामी, उदयगिरी, गूटी, दुर्गो को सुदृढ किया। तथा 1346 में होयसल तथा 1357 में मदुरै को भी साम्राज्य में मिला दिया।

- उसने राज्य में श्रेंष्ठ शासन स्थापित किया जो विजय नगर साम्राज्य का आधार बना।

➢ **बुक्का (1356–1377 ई.)**

- बुक्का ने सर्वप्रथम तमिलनाडु राज्य विजित किया।
- इसके काल में कृष्णा–तुंगभद्रा दोआब हेतु विजयनगर व बहमनी के मध्य संघर्ष आरंभ हुआ।
- बुक्का ने मदुरा विजित कर साम्राज्य को रामेश्वरम तक विस्तारित किया।
- उसने वेदमार्ग प्रतिष्ठा पक की उपाधि धारण की।
- इस प्रकार हरिहर और बुक्का ने विजय नगर की स्थापना की और उसे विस्तार प्रदान किया।

88. विजय नगर साम्राज्य के महानतम शासक के रुप में कृष्ण देवराय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिये।

➢ तुलुव वंशीय कृष्णदेवराय 1509 ई. में विजयनगर के सिंहासन पर आसीन हुए।
➢ उन्होने बहमनी शासक महमूद शाह को पराजित किया।
➢ बीजापुर के शासक युसुफ आदिल खाँ का युद्ध में वध कर दिया।
➢ कृष्णदेवराय ने रायचूर व कृष्णा तुंगभद्रा दोआब पर अधिकार कर लिया जो कि क्षेत्र की सबसे उपजाऊ भूमि थी।
➢ उन्होंने बीढ़र, वारंगल, गुलबर्गा पर विजय प्राप्त की।
➢ उड़ीसा के शासक से उदयगिरि व कोण्डावीदू किलों को जीत लिया।
➢ इस प्रकार उन्होंने विजयनगर साम्राज्य का विस्तार किया व उसे सुदृढता प्रदान की।
➢ कृष्णदेवराय की सांस्कृतिक उपलब्धियों का उल्लेख करें।
➢ उन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथ आमुक्तयावाद की रचना की जिसमें राजनीति का वर्णन है।
➢ उनके दरबार आठ महान विद्वान कवि सुशोभित करते थे जिन्हे अष्ट दिग्गज कहा जाता था।
➢ कृष्णदेवराय का काल तेलगू साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।
➢ इस समय चित्रकला की एक पृथक शैली विकसित हुई जिसे लिपासी चित्रकला कहा गया, इसमें विषयवस्तु रामायण व महाभारत से लिए जाते थे।
➢ स्थापत्य के क्षेत्र में कृष्णदेवराय ने नागल्लपुरम नामक नवीन नगर बसाया तथा विजयनगर में अनेक मंडपम् व गोपुरम द्रविड़ शैली में बनवाए।
➢ उनके शासनकाल में पुर्तगाली यात्री डोमिगो पायरन एवं क्रुआई बारबोसा विजयनगर आए।
➢ उसने हजारा मंदिर व विठ्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण कराया।

इस प्रकार कृष्णदेवराय के अधीन विजयनगर ने सांस्कृतिक उत्थान को प्राप्त किया।

89. विजय नगर कालीन प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिये

विजयनगर कालीन प्रशासन व्यवस्था केन्द्रीय व प्रांतीय स्तरों पर विभक्त थी।

➢ **केन्द्रीय प्रशासन व्यवस्था:**

राजा: केन्द्रीय शासन का सर्वोच्च था जिसे राय कहा जाता था उसके अधिकार असीमित थे।

मंत्रिपरिषद: राजा को सलाह हेतु प्रधानमंत्री के नेतृत्व में मंत्रिपरिषद होती थी। (20 सदस्यीय) यद्यपि राजा मंत्रिपरिषद की सलाह मानने हेतु बाह्य नहीं था।

प्रमुख केन्द्रीय अधिकारी वर्ग:—

सर्वनायक	—	मुख्य सचिव
मानेय प्रधान	—	गृहमंत्री
रायसम	—	शाही मुद्रा धारक
कवलकरम	—	राज सुरक्षा अधिकारी

90. विजयनगर कालीन प्रांतीय प्रशासन

- विजयनगर साम्राज्य 6 प्रांतों में विभक्त था

1. प्रांत प्रमुख नायक कहलाता था, जो राजपरिवार से संबंधित होता था।
2. प्रांत मंडलों में, मंडल कोट्टम (जिले) में कोट्टम गडु (तहसील) में, नाडु डर (ग्राम) में विभक्त थे।
3. प्रशासन की सबसे छोटी इकाई डर या ग्राम थी।
4. ग्रामों का शासन प्रबंध पंचायतों द्वारा होता था।
5. ग्राम का मुम्भ अधिकारी महानाकाचार्य था।
6. यह गांव में केन्द्र का प्रतिनिधि होता था।
7. गांवों में 12 अधिकारियों का समूह संपूर्ण ग्राम प्रशासन हेतु उत्तरदायी था जिन्हे आयंगर कहा जाता था।

91. विजयनगर साम्राज्य की आयंगर व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए।

- यह विजयनगर कालीन ग्रामीण प्रशासन की महत्वपूर्ण व्यवस्था थी।
- इस पर ग्रामीण प्रशासन हेतु 12 शासकीय व्यक्तियों को नियुक्त किया जाता था जिन्हें सामूहिक रुप से आयंगर कहा जाता था।
- आयंगरों के पद आनुवांशिक होते थे
  - इनके पद अवैतनिक होते थे। सेवा के बदले इन्हे कर मुक्त भूमि प्रदान की जानी थी।
  - आयंगर व्यवस्था के तहत निम्न अधिकारी थे—
    मुखिया, लेखाकार (कारनाम), पहरेदार (तलाईयारी) निरुनिक्र (सिंचाई देखरेख), परिपत्यागार (साहूकार पर्यवेक्षक) महानायकचार्य प्रमुख ग्राम अधिकारी थे।
    इस प्रकार आयंगर व्यवस्था के माध्यम से स्थानीय ग्रामीण व्यवस्था का संचालन किया जाता था।

92. विजयनगर कालीन व्यापार वाणिज्य की स्थिति की चर्चा करें।

- निकोलो कोण्टी, अब्दुल रज्जाक, डोयेगो पायस ने विजय नगर को व्यापार समृद्ध बताया है।
- आंतरिक व्यापार के अतिरिक्त मलाया, बर्मा, चीन, अरब, ईरान, अफ्रीका, पुर्तगाल से बाह्य व्यापार होता था।
- विजयनगर से कपड़ा, चावल, शोरा, चीनी, मसाले, इत्र आदि विदेशों को निर्मात किए जाते थे।
- हीरा, घोड़े, मोती, ताँबा, कोयला, पारा, रेशम आदि विदेशों से आयात किए जाते थे।
- मालाबार तट पर कालीकट सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह था ।
- इसके अलावा अन्य छोटे बंदरगाह भी थे, जिनसे मुख्यत: जल मार्ग के द्वारा ही व्यापार किया जाता था।

93. विजय नगर साम्राज्य के अंतर्गत नायकर व्यवस्था को समझाइए।

- पड़ोसी राज्यों से निरंतर संघर्ष के कारण विजयनगर साम्राज्य का स्वरूप सैनिक और सामंती हो गया।
- नायकर व्यवस्था के तहत नायकों की स्थिति सामंत की तरह थी जो कि प्रांतीय गवर्नरों से अलग थी।
- नायकों को अमरम भूमि प्रदान की जाती थी तथा उनके सैन्य दायित्व निश्चित कर दिए जाते थे।
- युद्ध में विजयनगर की सेना के साथ नायकों की सेना भी भाग लेती थी।
- सैद्धांतिक रूप से राज्य अमरम भूमि को हस्तगत कर सकता था किंतु व्यवहार में नायकों की क्षेत्रीय स्वायत्ता बनी रहती थी।
- नायकों की साम्राज्य में इस प्रभावपूर्ण सामंती स्थिति के कारण यह व्यवस्था नायकर व्यवस्था कहलाती है।

94. विजय नगर साम्राज्य के संदर्भ में विदेशी यात्रियों के विवरणों पर चर्चा कीजिए।

- विजय नगर साम्राज्य में यूरोप व एशियाई यात्रियों के विवरणों से तात्कालीन, सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है।

प्रमुख यात्री विवरण निम्न है:—

- **निकोलों कोंटी:—** इटली का यात्री जो 1420 ई. में देवराय प्रथम के शासनकाल में विजयनगर आया। इसने विजयनगर के शासक को सर्वाधिक शक्तिशाली बताया है तथा विजयनगर को समृद्ध राज्य बताया है।
  यह विजयनगर के समाज में सती प्रथा प्रचलन का भी उल्लेख करता है।
- **अब्दुर्रज्जाक:—**फारसी इतिहासकार जो देवराय द्वितीय के दरबार में विजयनगर आया था। वह राज्य की समृद्धि का विवरण देता है। समाज में सती प्रथा वेश्यावृत्ति का प्रचलन बताता है। उसने आर्थिक स्थिति की जानकारी प्रस्तुत की है तथा विजयनगर में व्यापार हेतु प्रयुक्त 300 बंदरगाहों का उल्लेख किया है।
- **डोमिंगो पायस:—** यह कृष्णदेवराय के शासनकाल में विजयनगर आया वह राजा को महान व न्यायप्रिय बताता है तथा साथ ही यहां प्रचलित नायंकर व्यवस्था की जानकारी देता है।

- **बरबोसा:—** यह पुर्तगाली लेखक था जो कृष्णदेवराय के काल में विजयनगर आया। यह विजयनगर के आंतरिक व बाह्य व्यापार का वर्णन करते हुए उसे आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बताता है।
- **नूनीज:—** यह पुर्तगाल निवासी व घोड़े का व्यापारी था। यह अच्युतदेवराय के काल में भारत आया। समाज में सती प्रथा बालविवाह दहेज प्रथा की कुरीतियों का प्र. चलन बताता है। यह विजयनगर की कर व्यवस्था तथा नायंकर व्यवस्था का भी उल्लेख करता है।

95. विजय नगर साम्राज्य के पतन के कारणों पर चर्चा कीजिए।

- 1336 ई. में स्थापित विजयनगर साम्राज्य का 17 वीं शताब्दी के मध्य तक अंत हो गया जिसके लिए निम्न कारण उत्तरदायी थे—
- **अयोग्य अधिकारी:—** कृष्ण देवराय के शासनकाल (1509–30 ई.) तक विजय नगर साम्राज्य विकास के चरम पर पहुँच गया किंतु 1530 में उनकी मृत्यु के पश्चात से ही विजयनगर का विघटन आरंभ हो गया। उनके उत्तराधिकारी अच्युत देवराय तथा सदाशिव राय अयोग्य सिद्ध हुए।
- **तालीकोश युद्ध की भूमिका:—** सदाशिव राय के मंत्री रामराय की नीतियों के कारण बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंड़ा, बीदर, की सम्मिलित सेनाओं ने 23 जनवरी 1565 ई. को विजयनगर के विरूद्ध युद्ध किया। जिसे तालीकोटा का युद्ध कहा जाता है। इसमें विजयनगर की हार हुई। इस युद्ध के बाद विजयनगर की स्थिति दक्षिण में कभी सुदृढ़ नहीं हो सकी।
- **दोषपूर्ण सैन्य संगठन:—** विजयनगर की सैन्य व्यवस्था सामंतवादी थी जिसका उत्तरदायित्व अपने सामंत के प्रति था। अत: सामंतों के विद्रोह व महत्वाकांक्षा के कारण सैन्य संगठन कमजोर पड़ गया जो साम्राज्य के लिए हानिप्रद सिद्ध हुआ।
- **दोषपूर्ण शासन व्यवस्था:—** विजयनगर साम्राज्य में गवर्नर प्रांतीय शासन का सर्वोच्च होता था। जो या तो राजपद से संबंधित या तो सामंत होता था। कृष्णदेवराय के बाद प्रांतय गवर्नरों ककी गतिविधियों को नियंत्रित करने में असफल रहे। इस प्रकार सांस्कृतिक रूप से उन्नत विशाल विजयनगर साम्राज्य का प्रशासनिक कमियों के कारण अंतत: पतन हो गया।

भक्ति एवं सूफी आन्दोलन

3 □□ां □□प्रश्नोत्तर

96. सूफीवाद

- इस्लाम की रहस्यवादी विचारधारा जिसके अनुसार हक (परमात्मा) तथा खलक (जीव) दोनों एक है। सूफी का शाब्दिक अर्थ पवित्रता या शुद्धता से है।

97. चिश्ती संप्रदाय

- यह सूफीवाद प्राचीन सिलसिला है।
- भारत में इसके संस्थापक (1192 ई) ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे।
- इसका मुख्य केन्द्र अजमेर था।
- निजामुद्दीन औलिया इसके प्रसिद्ध संत थे।

98. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती

- ये प्रसिद्ध सूफी संत व भारत में चिश्ती सिलसिले के संस्थापक थे।
- निजामुद्दीन औलिया इनके प्रसिद्ध शिष्य थे।

- इनकी दरगाह अजमेर में स्थित है।

99. मुहरावर्दी सिलसिला

- यह सूफी की शाखा थी।
- जिसकी स्थापना 12 वीं शताब्दी में सिहाबुद्दीन सुहरावर्दी ने की।
- इसका केन्द्र सुल्तान सिंध व पंजाब था।
- इस सिलसिले ने राज्य के संरक्षण को स्वीकार किया था।

100. नयनार

- ये दक्षिण भारत के शैव संप्रदाय से संबधित संत थे।
- इनकी संख्या 63 थी।
- इन्होंने दक्षिण में भक्ति आंदोलन का प्रसार किया।

101. अलवार

- ये दक्षिण भारत के वैष्णव संत थे जिनकी संख्या 12 थी।
- इन्होंने दक्षिण में भक्ति आंदोलन के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

102. शंकराचार्य

- केरल के कलादि ग्राम में 788 ई. में जनों महान दार्शनिक इनका दर्शन अद्वैतवाद के नाम से विख्यात है।
- इन्होंने 4 मठों केदारनाथ श्रृंगेरी (दक्षिण), पुरी (पूर्व) द्वारिका (पश्चिम) में स्थापित किए।

103. रामानुचार्य

- ये रामभक्ति शाखा के संत थे।
- इनका जन्म मद्रास के पेरुम्बर में 1017 ई. में हुआ था।
- इन्होंने दक्षिण में भक्ति आंदोलन का प्रसार किया गया तथा संप्रदाय की स्थापना की।

104. श्रीमद वल्लभाचार्य

An Institute for MPPSC Examination

- इनका जन्म 1479 ई में चंपारण (वाराणासी) हुआ।
- ये कृष्णभक्ति शाखा के संत थे।
- इनका भक्तिमार्ग पुष्टिमार्ग कहलाता है।

105. चैतन्य महाप्रभु

- इनका जन्म 1486 ई. में नादिया (बंगाल) में हुआ था।
- ये बंगाल में वैष्णववाद के संस्थापक थे।
- इन्होंने गोसाई संघ की स्थापना की, तथा भक्ति में संकीर्तन को महत्व दिया।

106. रैदास

- ये रामानंद के 12 शिष्यों में एक तथा चमार जाति के संत थे।
- इन्होंने मानवसेवा को मुक्ति का मार्ग बताया है।
- इन्होंने रायदासी संप्रदाय की स्थापना की।

107. दादूदयाल

- इनका जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद में हुआ था।
- कबीरपंथ के अनुयायी निर्गुण शाखा के संत थे।
- इन्होने ब्रम्हा संप्रदाय की स्थापना की

5 □□ां □□प्रश्नोत्तर

108. सूफी आन्दोलन के उद्भव व विकास को समझाइए।

- इस्लामिक विचार धारा में रहस्यावादियों को सूफी कहा गया।
- सूफी के अनुसार प्रेम द्वारा ईश्वर एकाकार हो सकता है।
- सूफी अरबी शब्द सका से निकला है जिसका अर्थ शुद्धता व पवित्रता से है।
- सूफी सिलसिले का आधार कुरान है जिसकी रुढ़िवादी व्याख्या शरीयत तथा उदारवादी व्याख्या तरीकत अर्थात् हक (ईश्वर) व खलक (जीन) एक है।
- भारत में दिल्ली सल्तनत के पूर्व ही सूफी सिलसिले का आवागम हो चुका था।
- 12 वीं शताब्दी तक सूफी संप्रदाय 12 सिलसिलों में विभक्त हो गया।

109. सूफी संत के प्रमुख सिद्धांतों की चर्चा करे।

- ईश्वर एक है आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है।
- ईश्वर सत्य निर्गुण, निराकार है।
- सूफी सादा जीवन को महत्व देता है।
- प्रेम को ईश्वर प्राप्ति का महत्व देता है।
- सूफी विचारधारा में वीर व मुरीद के मध्य संबंध को महत्व दिया गया है।
- सूफी संतों ने धार्मिक सहिष्णुता पर बल दिया।
- वे सरल तथा आडंबर विहीन थे तथा हृदय की पवित्रता पर बल देते थे।
- बे–शरा सूफी इक्यासी विधान मानते थे। जबकि बेशरा मुक्त सूफी संत थें

110. भक्ति आन्दोलन के उद्भव एवं विकास को समझाइए।

- भक्ति का आशय है ईश्वर के प्रति आस्था प्रेम, व समर्पण का भाव।
- भारत में वैदिक काल से ही भक्ति के चिन्ह मिलते है।
- प्राचीन रामायण व गीता में भक्ति को मुक्ति का मार्ग बताया गया है।
- भारत में शंकराचार्य के अद्धैतवाद दर्शन से ही भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात होता है।
- भक्ति आंदोलन की शुरुआत 6 वीं शताब्दी से तमिल क्षेत्र में हुई जिसके विस्तार में 12 अलवार व 63 नयनार संतों का विशेष योगदान है।
- भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत में उत्तर भारत में रामानंद द्वारा लाया गया।
- रामानंद की शिक्षाओं से ही दो भक्ति संप्रदायों का प्रार्दुभाव हुआ।

  1. सगुण भक्ति 2- निर्गुण भक्ति

  इस प्रकार भक्ति आंदोलन संपूर्ण दक्षिण व उत्तर भारत में फैल गया।

111. भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति के कारण लिखिए।

1. हिन्दू धर्म में यज्ञ, कर्मकाण्ड जटिलताओं में सहज भक्ति मार्ग की आवश्यकता को बल मिला।
2. दीर्घकालीन पराधीनता व दुख ने मानव को ईश्वर शरण में जाने को प्रेरित किया।
3. भारतीय समाज की जातीय जटिलता ने भक्ति आंदोलन के मार्ग खोले जिसे निम्न उपेक्षित वर्ग भी अपना सकता था।
4. धर्माथ मुस्लिम शासकों द्वारा धार्मिक सरंचनाओं के विनाश ने भक्ति मार्ग को प्रशस्त किया।

5. परस्पर जातीय व धार्मिक वैभवस्यता ने सद्भावना पूर्ण भक्तिमार्ग अपनाने को प्रेरित किया।

112. भक्ति आंदोलन की शिक्षाओं एवं विशेषतओं का उल्लेख करिए।

1. आंडबरों की उपेक्षा तथा सच्ची भक्ति पर बल।
2. एकेश्वरवाद में आस्था पर बल दिया गया है। (रामकृष्ण, खुदा—ईश्वर में कोई अंतर नहीं है।
3. ईश्वर प्राप्ति हेतु प्रेम व श्रद्धा पर बल दिया है।
4. जातिवाद—वर्गभेद का विरोध किया गया है।
5. सर्वधर्म एकता पर बल दिया गया है।
6. भक्ति संतों ने अपने उपदेशों में सरल जनभाषा (ब्रज, अवधी) का प्रयोग किया।
7. सांप्रदायिकता, कट्टरता, अतिवाद का विरोध किया।
8. हृदय की शुद्धता पर बल जिससे ईश्वर की प्राप्ति संभव है।

113. निर्गुण भक्ति शाखा के अग्रणी संत कबीर दास की शिक्षाओं का उल्लेख करें।

- कबीरदास एक सुधारवादी व समन्वयवादी संत थे।
- उन्होंने जातिप्रथा, कर्मकाण्ड, बाह्य आंडबर, मूर्तिपूजा का विरोध किया है।
- वे अवतार वाद के विरोधी व एकेश्वरवाद पर आस्थ रखते थे।
- वे निर्गुण संत होते हुए भी गृहस्थ जीवन से जुडे रहे।
- कबीरदास के उपदेश बीजक में संकलित है।
- उनकी भाषा सधुकक्क्डी है जिसमें ब्रज अवधी, उर्दु, फारसी भाषाओं के शब्द मिलते है। उन्होंने सामाजिक समरसता व हिन्दू—मुस्लिम एकता पर बल दिया।

❖ मुगल शासक और इनका प्रशासन,मिश्रित संस्कृति का अभ्युद्य

3 □□ीं □□प्रश्नोत्तर

114. घाघरा युद्ध

- 6 मई 1529 ई. में
- अफगान सेवा एवं बाबर के मध्य हुआ।
- इसमें बाबर की विजय हुई।
- यह बाबर की अंतिम विजय थी।

115. पानीपत प्रथम युद्ध

- 21 अप्रैल 1526 ई. को
- बाबर व इब्राहिमलोदी के मध्य हुआ जिसमें बाबर विजयी रहा।
- इसमें सर्वप्रथम तुगलमा युद्ध नीति का प्रयोग बाबर द्वारा किया गया।

116. बाबरनामा

- यह बाबर द्वारा तुर्की में रचित आत्मकथा है।
- इसका अब्दुलरहीम खानखाना द्वारा फारसी में अनुवाद किया गया।
- इसमें बाबर ने भारतीय राजनीति व वनस्पति का वर्णन किया है।

117. खानवा युद्ध

- 17 मार्च 1527 को ।
- राजासांगा व बाबर के मध्य हुआ।
- इसमें बाबर विजयी रहा।
- इस युद्ध में बाबर द्वारा जेहाद का नारा दिया गया।

118. चौसा युद्ध

- 25 जून 1539 को।
- शेरशाह व हुमायूं के मध्य हुआ।
- इसमें शेरखां विजयी रहा। तथा शेरशाह की उपाधि धारण की ।

119. विलग्राम युद्धः—

- 17 मई 1540 ई. कन्नौज के निकट।
- शेरशाह व हुमायूं के मध्य युद्ध।
- शेरशाह विजयी रहा तथा आगरा, दिल्ली पर अधिकार किया।

120. हेमूः—

- मो. आदिलशाह सूर का सेनापति था।
- इसने दिल्ली पर नियंत्रण कर लिया।
- यह 1556 ई. में पानीपत युद्ध में सूर सेना का नेतृत्वकर्ता था।
- दिल्ली पर बैठने वाला अंतिम हिंदू शासक था।

121. दीन—ए—इलाहीः—

- अकबर द्वारा 1582 ई. में आरंभ एक नवीन धर्म।
- सूत्र वाक्य—अल्ला—हो—अकबर।
- प्रधान पुरोहित—अबुल कजल था।

- यह एकेश्वरवाद पर आधारित था।

122. पानीपत –द्वितीय युद्ध

- यह युद्ध 5 नवंबर 1556 को ।
- सूर सेनापति हेमू मुगल सेनापति बैरम खां के मध्य हुआ।
- इसमें हेमू की हार हुई।

123. जिनचंद्र सूरीः–

- जैन धर्माचार्य जिन्होंने इबादत खाने धर्मचर्या में भाग लिया।
- इन्हें अकबर द्वारा युग प्रधान की उपाधि दी गई।

124. इलाही संवतः–

- अकबर द्वारा 1884 में जारी नवीन कैलेंडर जिसे हिजरी संवत के स्थान पर जारी किया गया।

125. हल्दी घाटी युद्धः–

- 18 जून 1576 ई. को मेवाड़ के शासक महाराजा प्रताप व अकबर के मध्य हुआ
- अकबर की सेना का नेतृत्व मानसिंह ने किया।
- इसमें अकबर विजयी रहा।

126. दहसाला व्यवस्थाः–

- यह अकबर द्वारा आरंभ व टोडरमल द्वारा प्रतिपादित भू–राजस्व व्यवस्था (1580ई.) थी।
- इसमें 1/3 भू–राजस्व का निर्धारण किया।
- इसमें नकद या अनाज दोनों में राजस्व भुगतान व्यवस्था थी।

127. तानसेनः–

- ये 1605 में ग्वालियर में जस्ने महान संगीतज्ञ थे।
- ये अकबर के नवरत्न व दरबारी कवि थे।
- आरंभ में रीवा राजा रामचंद्र का राजाश्रय मिला।
- अकबर द्वारा कण्ठाभरण वाणी विलय की उपाधि प्राप्त हुई।

128. अबुल कजलः–

- ये अकबर के नवरत्नों में से एक थे।
- ये अकबरनामा ग्रंथ का रचनाकार तथा दीन–ए–इलाही धर्म के मुख्य पुरोहित थे।
- 1602 में वीर सिंह बुंदेला द्वारा हत्या कर दी गई।

129. कैप्टन हॉकिंसः–

- जहांगीर काल में भारत आए सम्राट जेम्स के दूत तथा ।
- तथा ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधि थे।
- जहांगीर द्वारा 400 का मनसब प्राप्त किया।

130. दारा शिकोहः–

- शाहजहां का विद्वान पुत्र ।
- भगवत्गीता, रामायण का फारसी अनुवाद कराया।
- सई–ए–अकबर नाम से उपनिषदों का अनुवाद कराया।
- यह कादिरी सिलसिले का मुरीद था।

131. घरमट युद्धः–

- 15 अप्रैल 1658 ई. में दारा व औरंगजेब के मध्य उत्ताधिकार हेतु युद्ध।
- औरंगजेब विजयी रहा।

132. बुंदेला विद्रोहः–

- 1628 ई. में शाहजहां के शासनकाल का प्रथम विद्राह ।
- बुंदेला सरदार जुझार सिंह द्वारा विद्रोह।
- शाहजहां ने बनाया (प्रथम सैन्य अभियान)
- खान जहां लोदी ने विद्रोह दबाने में मदद की ।
- अत: इसे पेटीकोट शासन कहा गया।

133. वीरसिंह बुंदेला:—

- ओरछा का बुंदेला शासक ।
- जहांगीर का मित्र व समर्थक।
- जहांगीर के आदेश पर अबुल कजल की हत्याकर दी।

134. गुलबदन बेगम:—

- हुमायूं की बहन।
- हुमायूंनामा की रचनाकार।
- अरबी , फारसी भाषाक की ज्ञाता।

135. आइने अकबरी:—

- अबुल कजल द्वारा फारसी में रचित पुस्तक।
- अकबर कालीन मुगल प्रशासन का वर्णन है।
- विभिन्न फसलों, उसमें प्राप्त राजस्व, राजस्व निर्धारण प्रणाली का उल्लेख है।

136. न्याय की जंजीर:—

- जहांगीर द्वारा आगरा किले के शाहबुर्ज एवं यमुना तट पर स्थित पत्थर के खंबे पर लगवाई गई।
- इसके द्वारा कोई भी नागरिक सीधे बादशाह से न्याय की गुहार लगा सकता था।

137. बाजबहादुर:—

- मालवा का शासक (1555–1562)।
- 1561 में अकबर के सेनापति आदम खां से युद्ध में पराजित हुआ।
- प्रसिद्ध रानी रूपमति ने आत्महत्या कर ली।

138. राज्यनामा

- यह महाभारत की फारसी अनुवादित रचना है। जिसका अनुवाद अकबरकालीन साहित्यकार अब्दुल कादिर बदाँयूनी ने किया था।

139. बदाँयूनी

- अकबर के दरबार का प्रसिद्ध साहित्यकार था।
- इसने रज्जनामा राय से महाभारत का फारसी अनुवाद तथा रामायण का भी फारसी अनुवाद किया।

140. खफी खाँ

- यह औरंगजेब कालीन फारसी कवि थे।
- इन्होंने मुंतखन–उल–लुनाब नामक ग्रंथ की रचना फारसी में की है।

141. ईश्वरदास नागर

- औरंगजेब कालीन कवि थे।
- इन्होंने फातूहात–ए–आलमगिरी नामक ग्रंथ की रचना फारसी भाषा में की है।

142. पुरंदर संधि

- यह संधि 1665 ई. में महाराजा जयसिंह व शिवाजी के मध्य हुई।

- शिवाजी ने अपने 23 दुर्ग मुगलों के अधीन कर दिए तथा बीजापुर से युद्ध में मुगलों की सहायता का आश्वासन दिया।

143. रामदास

- महाराष्ट्र के महान संत कवि व शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे।
- दशबोध इनकी रचनाओं व उपदेशों का संकलन है।

144. अष्टप्रधान

- शिवाजी के 8 मंत्रियों का मंत्रिमडल अष्टप्रधान कहलाता है।
- पेशवा, सुमंत, आयात्म पंडितराव, अष्ट प्रधान के प्रमुख मंत्री थे।

145. पेशवा

- शिवाजी के मंत्रिमंडल का प्रधानमंत्री
- यह प्रशासन व राजस्व का प्रमुख था।
- कालांतर में यह पद अत्यधिक शक्तिशाली हो गया।

5 □□ाँ □□प्रश्नोत्तर

146. बाबर के भारत पर आक्रमण के क्या कारण थे?

1. मध्य एशिया में राजनीतिक अस्थिरता (उजबेको से हार)।
2. समरकंद का बार—बार हाथ से निकल जाना।
3. विशाल साम्राज्य की स्थापना की महत्वकांक्षा।
4. शासन स्थापना हेतु धन की आवश्यकता।
5. भारत में राजीतिक अस्थिरता ।
6. आलम खाँ, दौलत खाँ द्वारा भारत पर आक्रमण का आमंत्रण।
7. तैमूर का वंशज होने के कारण पंजाब पर अधिकार मानता था।

बाबर के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति की विवेचना करें।

147. सिद्ध कीजिए—'' तात्कालीन भारतीय राजनीतिक स्थिति ने बाबर की विजय को अपरिहार्य बना दिया''।

1. संपूर्ण भारत छोटे—छोटे राज्यों में विभक्त था।
2. राज्यों में राजनीतिक एकता का आभाव था।
3. दिल्ली में इब्राहिम लोदी के शासन में आंतरिक विद्रोहों का दौर।
4. पंजाब का सूबेदार दौलत खाँ दिल्ली पर अधिकार चाहता था अत: बाबर को आक्रमण हेतु आमंत्रण दिया।
5. बंगाल में नुसरतशाह का स्वतंत्र शासन स्थापित हो चुका था।
6. मालवा का शासक का शासक महमूद—II प्रधानमंत्री मेदिनीराय के विद्राहों से जूझ रहा था।
7. बिहार, गुजरात, मेवाड़, जौनपु, सिंध स्वतंत्र हो चुके थे।
8. दक्षिणी राज्यों में खनदेश, विजयनगर, बहमनी स्वतंत्र राज्यों के रूप में स्थापित थे। उपरोक्त परिस्थितियों ने बाबर की विजय को अपरिहार्य बना दिया।

148. '' बाबर एक सफल सेनानायक था परंतु साम्राज्य निर्माता नहीं''। कथन की युक्ति युक्त विवेचना कीजिए?

वह एक सफल सेनानायक व कूटनीतिक दृष्टि से कुशल था। उसने दो बार समरंद में युद्धों का नेतृत्व किया तथा भारत में पानीपत (1526ई.) खानवा (1529ई.) चंदेरी युद्ध (1528ई.), घाघरा युद्ध (1529ई.) में विजय प्राप्त कर अपनी सैन्य नेतृत्व व कुशलता का परिचय देता है।

किंतु न तो साम्राज्य निर्माण की उसकी स्थिति थी और न ही यह उसका लक्ष्य था क्योंकि आरंभ में वह अपने आस्तित्व के संकट मात्र से जूझता रहा और आगे उसे महज एक राज्य स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

यद्यपि उसने कुछ ऐसी उपलब्धियां प्राप्त की जिनके आधार पर भावी साम्राज्य का निर्माण संभव था।।

जैसे—उत्तर भारत के समृद्ध क्षेत्र पर विजय, पश्चिमोत्तर प्रांत पर विजय, सशक्त सैन्य ढ़ाँचे का निर्माण करना। हुमायुँ को धार्मिक सद्भाव की नीति सिखाना।

इस प्रकार वह सैन्य व कूटनीतिक नेतृत्व में कुशल था किंतु साम्राज्य का निर्माता नहीं था।

149. बाबर ने तुजुक—ए—बाबरी में भारत के बारे में क्या विवरण प्रस्तुत किए हैं?

अथवा

इतिहास अध्ययन के स्त्रोत के रूप में तुजुक—ए—बाबरी के विवरणों की विवेचना कीजिए?

यह चगताई तुर्की में लिखित बाबर की आत्मकथा थी। इसमें बाबर ने भारत की तात्कालीन स्थिति का निम्न विवरण दिया है—

1. इसमें भारत के विभिन्न राज्यों गुजरात, बंगाल, मालवा, विजय नगर, बहमनी का विवरण है।
2. इसमें विस्तार से विभिन्न क्षेत्रों की जलवायु, भौगोलिक परिदृश्य, वनस्पति, पशु—पक्षियों का विवरण है।
3. इसमें भारत की अर्थ व्यवस्था शिल्प, उद्योग, उत्पादन प्रणाली का वर्णन किया गया है।
4. बाबर के युद्धों व राजनैतिक घटनाक्रम का उल्लेख है।
5. कला चित्रकला आदि सांस्कृतिक विशेषताओं का उल्लेख है।

वह भारत के स्थापत्य में सामंजस्य व अनुपात की कमी बताता है यद्यपि वह ग्वालियर के स्थापत्य की सराहना करता है। किंतु उसके विवरणों में कहीं—कहीं अंतराल तथा तथ्यों की गलतियाँ भी है जैसे— वह पानीपत में अपनी सेना इब्राहिम लोदी की सेना से कम बताता । हिंदुस्तानियों के प्रति ईमानदार न होने का पूर्वाग्रह रख अत: ऐतिहासिक अध्ययन के रूप में तुजुक बाबरी के साथ मिर्जा हैदर की तारीख—ए—रशीदी तथा गुलबदन बेगम की हुमायुँनामा के विवरण देखने भी अधिक उपर्युक्त है।

150. ''पानीपत का युद्ध एक महत्वपूर्ण निर्णायक युद्ध था'' सिद्ध कीजिए?

- पानीपत युद्ध (1526) में इब्राहिम लोदी की पराजय हुई
- भारत में लोदी वंश का पतन हो गया
- दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया
- भारत में नवीन मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई
- राजपूतों का दिल्ली विजय के स्वप्न पर पानी फिर गया।
- इस प्रकार भारत पर मुगलों का शासन सुरक्षित हो गया।

इस प्रकार इस युद्ध के निर्णायक व दूरगामी राजनीतिक परिणाम प्रदर्शित होते है।

151. बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में वर्णित भारत के विवरण का उल्लेख करे?

बाबर ने तुजुक—ए—बाबरी (तुर्की) में भारत का निम्न विवरण दिया हैं—

- भारत की राजनीतिक दशा का वर्णन
  (भारत में पांच मुस्लिम व दो हिंदु शासकों का विवरण)
- इब्राहिम लोदी, दौलत खाँ, राजा सांगा के बारे में बताया है।
- भारतीय समाज व जीवन स्तर की जानकारी
- भारतीय वनस्पति, पशु—पक्षियों का वर्णन
- उसने भारतीय कारीगरों की प्रशंसा की है।
- आगर, ब्यावरा, ग्वालियर इमारतों को अनूठा बताया
- व्यक्तियों के असभ्य होने और भारत में अच्छी नस्ल के घोड़े न होने की बात की है।

152. भारत में हुमायुँ के शासन की आरंभिक चुनौतियाँ का उल्लेख करें—

- भाइयों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध
- अफगान मुगलों से सत्ता पुन: चाहते थे
- अफगान सरदार शेरसाह एक बड़ी चुनौती था
- गुजरात काा शासक बहादुरशाह स्वतंत्र राज्य चाहता था
- बांल का शासक नुसरतशाह भी स्वतंत्र राज्य की इच्छा रखता था।
- राजपूतों का विद्रोह
- विशाल साम्राज्य के प्रशासन की चुनौती
- रिक्त राजकोष
  (बाबर द्वारा उपहार, पुरसीरि पर धन अपव्यय)

153. हुमायुँ के संदर्भ में लेनपूल के कथन की व्याख्या कीजिए?

- हुमायुँ का संपूर्ण जीवन संघर्षो से भरा रहा । जीवन के आरंभिक दौर में भाईयों के मध्य उत्तराधिकार युद्ध फिर भारत में कालिंजर, देवरी, चुनार, गुजरात, मालवा के युद्ध और अपने प्रबल प्रतिद्वंदी शेरसाह से युद्धों में ही हुमायुँ का संपूर्ण जीवन व्यतीत हो गया।
- इनके अलावा दिल्ली साम्राज्य के आर्थिक संकट, आंतरिक विद्रोह और विघटनों की समस्या के निवारण में वह संलग्न रहा।
- अंत में भी वह सत्ता का सुख नही भोग सका और सरहिंद युद्ध के एक वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।
- इस प्रकार वह जीवनपर्यंत संघर्षो से जूझता रहा इसलिए प्रसिद्ध इतिहासकार लेनपूल ने हुमायूँ के संदर्भ में ऐसा कहा है।

154. हुमायुँ की असफलता के कारण लिखिए?

1. भाइयों के मध्य साम्राज्य का बँटवारा किया और उन्हीं से संघर्षो में जूझता रहा,

2. कालिंजर आक्रमण पर धन का अपव्यय
3. समय का दुरूपयोग व नशे का आदी (प्रत्येक युद्ध के बाद जश्न व अफीम सेवन)
4. शेरशाह की शक्ति का आंकलन नहीं कर पाया
5. शेरशाह की योग्यता कुशल नेतृत्व
6. भाईयों का असहयोग (विलग्राम पराजय के बाद भाईयों ने दूरी बना ली)
7. धन का अपव्यय(निरंतर सैनिकों व सरदारों को धन बाँटता रहा)
8. जिससे राज्य में आर्थिक संकट आ गया।
9. हुमायूँ ने जब नई सेना संगठित की तब उसे धन की कमी महसूस हुई।

155. शेरशाह द्वारा साम्राज्य विस्तार हेतु किए गए सैन्य अभियानों का वर्णन कीजिए।

1540 में सूर साम्राज्य की स्थापना के बाद शेरशाह द्वारा साम्राज्य विस्तार नीति के तहत निम्न सैन्य अभियानों का संचालन किया गया—

गकखड़ विजय:—

उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत की क्रूर गकखड़ जाति पर विजय प्राप्त की तथा सीमा सुरक्षित की।

बंगाल विजय (1541):—

बंगाल के सूबेदार खिज्रखाँ ने स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली थी अत: उसने खिज्रखाँ को पराजित कर बंदी बना लिया।

1. **मालवा विजय (1541):—**
2. मलवा के शासक कादिरशाह को पराजित कर मालवा पर अधिकार कर लिया और सुजात खाँ को मालवा का सूबेदार बनाया।
3. **रणथंभौर विजय:—**मालवा अभियान से लौटते हुए रणथंभौर के शासक उस्मान खाँ को अधीन कर लिया तथा आदिलशाह को सूबेदार नियुक्त किया।
4. **रायसेन विजय (1543):—**
5. रायसेन के शासक पूरनमल (राजपूतों) से संधि किंतु कुछ समय पश्चात् रायसेन दुर्ग पर अधिकार कर लिया ।
6. सिंध, मुल्तान व मारवाड़ विजय:—
7. सिंध में हैवत खाँ व मारवाड़ में राजा मालदेव को पराजित कर सिंध, मुलतान, अजमेर, जोधपुर, मालवाड़ पर अधिकार कर लिया।
8. **चित्तौड़ विजय (1544 ई.):—**
9. मारवाड़ विजय के पश्चात् चित्तौड़ व जयपुर को भी दिल्ली शासन के अधीन कर लिया।
10. **कालिंजर विजय (1545):—**
11. यह शेरशाह की अंतिम विजय थी। कालिंजर शासक कीरतसिंह के विरूद्ध उलका नामक आग्नेयाश्त्र चलाने के दौरान शेरशाह के समीप ही बारूदी गोला कट जाने से शेरशाह की मृत्यु 22 मई 1545 को हुई।
12. इस प्रकार शेरशाह का शासन पेशाबर, मुल्तान सिंध, बुरहानपुर सीमा से लेकर बंगाल तक विस्तृत हो गया।

156. शेरशाह कालीन प्रशासन व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए?

- शेरशाह महान् सम्राट, महान विजेता होने के साथ–साथ कुशल प्रशासक भी था।
- शेरशाह का प्रसाशन केंद्र प्रांत व ग्राम प्रशासन में विभक्त था।

शेरशाह कालीन केंद्रीय प्रशासन:–

- केंद्रीय शासन का सर्वोच्च स्वयं शेरशाह था।
- वह निरंकुश व स्वेच्छाचारी था।
- यद्यपि उसने मंत्रिपरिषद् गठित नहीं की किंतु उसकी सहायता हेतु निम्न विभाग थे–

1. दीवान–ए–विजारत:– वित्त विभाग
2. दीवान–ए–रसालत:– विदेश विभाग
3. दीवान–ए–आरिज:– सैन्य विभाग
4. दीवान–ए–इंशा:– सामान्य प्रशासन
5. दीवान–ए–कजा:– न्याय विभाग
6. दीवान–ए–बरीद:– गुप्तचर विभाग

157. शेरशाह के भू–राजस्व संबंधी सुधारों का उल्लेख करें?

1. शेरशाह की लगान व्यवस्था रैयतवाड़ी थी।
2. शेरशाह ने उत्पादन आधारित भूवर्गीकरण कराया ।
3. उत्तम, मध्यम व निम्न तीन श्रेणी की भूमि में उपज आधारित लगान व्यवस्था।
4. भूमि कर नगद व अनाज दोनों ही प्रकार से दिए जाने की व्यवस्था थी।
5. लगान निर्धारण हेतु 3 पद्धतियाँ थीं–

   - गल्लावख्शी या बँटाई
   - नश्क या मुकताई या कानकूत
   - नकदी अथवा जब्ती

6. उसने भू–मापन हेतु सिकंदरी गज का प्रयोग किया
7. सरकार द्वारा कृषक–को पट्टे निर्धारित कर वार्षिक लगान निर्धारित किया गया।
8. कर वसूली में मध्यस्थों का कोई स्थान नहीं था।

इस प्रकार उसने उत्कृष्ट भू–राजस्व व्यवस्था लागू की।

158. व्यापार एवं वाणिज्य की उन्नति हेतु शेरशाह द्वारा किए गए सुधारों का वर्णन कीजिए?

- सर्वप्रथम शेरशाह ने स्थान–स्थान पर लगने वाले बिक्री कर को समाप्त कर केवल व्यापार वस्तुओं के राज्य में प्रवेश व बिक्री हेतु राज्य से बाहर जाने पर कर की व्यवस्था की।
- व्यापार व आवागमन हेतु सड़क व्यवस्था में निम्न सुधार किए–

1. पुरानी सड़कों में सुधार कराया
2. ग्रांड ट्रक रोड का निर्माण (कोलकाता से पेशावर तक)
3. आगरा से जोधपुर व चित्तौड़ तक
4. लाहौर से मुल्तान सड़क
5. आगरा से बुरहानपूर सड़क

J उसने लगभग 1700 सरायों का निर्माण कराया जो यात्री विश्राम गृह एवं व्यापार हेतु प्रयुक्त किए जाते थे।
इस प्रकार कर सुधार, सड़क जाल व सराय निर्माण से व्यापार वाणिज्य में विशेष उन्नति हुई।

159. अकबर की महत्वपूर्ण विजयों व साम्राज्य विस्तार नीति का उल्लेख करें?

J 1560 में स्वतंत्र शासन के पश्चात उसने निम्न विजय अभियानों के माध्यम से अपने साम्राज्य का विस्तार व सुदृढ़ीकरण किया—

1. **मालवा विजय (156१ई.):—**
अकबर ने मालवा के शासक बाज बहादुर को हराकर मालवा पर अधिकार कर लिया तथा पीर मुहम्मद को मालवा का सूबेदार बनाया।

2. **गोंडवाना विजय** (1564):—
आसक खाँ व गोंडवाना महारानी दुर्गावती के मध्य युद्ध।
रानी वीरता से लड़ी किंतु अंतत: आसफ खाँ विजयी रहा।

3. **चित्तौड़ विजय**(1567):—
चित्तौड़ के राजपूत शासक राजा उदयसिंह पर अकबर ने स्वयं नेतृत्व करते हुए आक्रमण किया। राजपूत वीरता से लड़े किंतु हार गए (४ माह युद्ध) अकबर ने चित्तौर पर अधिकार कर आसफ खाँ को वहां का सूबेदार नियुक्त किया।

4. **रणथंभौर विजय** (1569ई.):—
अकबर ने रणथंभौर के अजेय दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
शासक सुरजन हाड़ा ने अधीनता स्वीकारी।

5. **कालिंजर विजय** (1569ई.):—
मुगल सेना ने कालिंजर शासक रामचंद्र पर आक्रमण किया उन्होंने आत्मसमर्पण कर अधीनता स्वीकार ली।
कालिंजर दुर्ग पर अकबर का अधिकार हो गया।

6. **जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर विजय** (1570ई.)

7. **गुजरात विजय** (1572ई.):—
यह सामरिक व व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य था। अत: मुगल सेना ने शासक मुजक्कर खाँ को पराजित कर गुजरात पर अधिकार कर लिया।

8. **मेवाड़ से संघर्ष** (1567):—
18 जून 1576 को राजा मानसिंह व आसफ खाँ के नेतृत्व में एक विशाल सेना के साथ राजपूत शासे महाराजा प्रताप पर आक्रमण । यद्यपि वे पराजित रहे किंतु अधीनता नहीं स्वीकारी और अरावली पहाड़ियों में शरण ली।

9. **बिहार, बंगाल विजय** (1574–75):—

10. **सिंध, कांधार, ब्लूचिस्तान विजय**(159०–95ई.):—

11. **खानदेश विजय** (1591):—
खानदेश के शासक अली खाँ ने अकबर के अधीनता स्वीकार करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

12. **अहमदनगर विजय** (1600ई.):—
अकबर स्वयं नेतृत्व करते हुए अहमदनगर की शासिका चांदबीबी को पराजित कर अहमदनगर पर अधिकार कर लिया।

13. असीरगढ़ विजय (1600ई.):—

अकबर ने 1599ई. में खान देश पर आक्रमण कर उसकी राजधानी बुरहानपुर पर अधिकार कर लिया। पुन: असीरगढ़ दुर्ग को छ: माह तक घेरे रहा। अंतत: असीरगढ़ के शासक मीरन बहादुर ने आत्मसमर्पण कर दिया।

यह अकबर की अंतिम विजय थी।

इस प्रकार अकबर ने काबुल कांधार से लेकर अध्यद नगर व पूर्व में सुनार गांव से लेकर पश्चिम में सिंध सौराष्ट्र तक एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की ।

160. राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए अकबर ने क्या प्रयास किया तथा इसमें वह कहां तक सफल रहा?

- उसके राष्ट्रीय एकीकरण के प्रयासों के कारण उसे राष्ट्रीय शासक कहा जाता है।
- उसे सभी धर्मसम्प्रदायों को एक राष्ट्रीय धर्म दीन—ए—इलाही के अंतर्गत लाने का प्रयास किया।
- उसने भेदकारी करों जैसे तीर्थ यात्रा कर, जजिया कर, की समाप्ती कर दी।
- उसने अमीर वर्ग के मुस्लिमों के समान्तर हिंदुओं को स्थान प्रदान कर जातीय भेदों को समाप्त करने का प्रयास किया।
- उसने सर्वप्रथम अपनी राजपूत नीति के तहत राजपूतों को सात हजारी मनसब प्रदान किए । तथा उसने उदार व्यवहार किया।
- उसकी राष्ट्रीय एकीकरण के प्रयास इंडो—इस्लामिक स्थापत्य में भी प्रदर्शित होते है।
- जहां उसने इस्लामी कला के साथ भारतीय कला का समनवय प्रस्तुत किया।
- अपने उपदेश में अकबर काफी हद तक सफल रहा। उसने राजपूतों तथा अमीरों के साम्राज्य के समर्थन तथा विस्तार के उपकरण के रूप में तब्दील कर लिया।
- अकबर के इन्हीं प्रयासों से उसकी धार्मिक सहिष्णुता की छबी विकसित हुई । तथा अगले 200 वर्षों हेतु मुगल साम्राज्य अपने आस्तित्व में कायम रह सका।

161. औरंगजेब की धार्मिक नीति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए?

या

प्रतिक्रियाओं व परिणामों के आधार पर औरंगजेब की धार्मिक नीति का मूल्यांकन कीजिए?

- शासन के इतिहासों में औरंगजेब की नीतियों व कार्यो का मूल्यांकन एक विवादा. स्पद मुददा रहा है।
- हम देखते है कि आरंभ में औरंगजेब की धार्मिक नीति हिंदु हितों को निक्षुब्ध किये बिना रूढीवादी व सुन्नी व उलेमाओं को संतुष्ट करना था अत:आरंभ में उसने इस्लाम के शुद्धिकरण के कदम उठाये।
- किंतु 1679ई. के पश्चात उसने उन धार्मिक नीति का पालन किया जैसे—जजिया का आरोपण, हिंदु मंदिरों का ध्वंश, 1687ई. में उसने संभूजी के विरूद्ध विजयपुर गोलकुंड़ा के मुस्लिम शासको से धार्मिक समर्थन हेतु अपील करता रहा।
- किंतु उसने बीजापुर गोलकुंड़ा विजय के पश्चात 1704ई. में दक्षिण में जजिया को समाप्त कर दिया जहां उसका उद्देश्य मराठा नामकों का समर्थन प्राप्त करना था।
- यह सत्य है कि उसकी धार्मिक नीति राजनितिक परिस्थितियों से प्रेरित रही। किंतु उसकी नीतियों से अकबर की सुलह—ए—कुल की नीति प्रभावित हुई और विद्रोहों में वृद्धि हुई जिससे साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया तीव्र हुई।

162. मुगलकाल में नगरीकरण के विकास पर अपने मत प्रस्तुत कीजिए?

तृतीय नगरीकरण की प्रक्रिया जो 10वीं सदी में आरंभ हुई। मुगलकाल में अपनी पराक्रमण पर पहुँच गई।

यह वह काल है जब बड़ी संस्था में गांवों का विकास कस्बों व कस्बों का विकास नगरों के रूप में हुआ।

महत्वपूर्ण फारसी लेखक निजामुद्दीन अध्यद 120 बड़े नगर तथा 3200 कस्बों का उल्लेख करता है।

- मुगलकाल में अर्थव्यवस्था के मौद्रीकरण से नकद संग्रह बढ़ा जिससे नगरीकरण की आवश्यकताओं की पूर्ति हुई।
- मुस्लिम शासकों ने बड़ी संस्था में मदद—ए—आश प्रदान किए। जो आगे चलकर मुस्लिम कस्बों व नगरों में विकसित हुए।
- कुछ साम्राज्य की राजधानी व प्रांतीय राजधानियों का विकास भी नगरों के रूप में हुआ। जैसे— दिल्ली, आगरा इलाहाबाद आदि ।
- कुछ उत्पादन से जुडे नगरों के विकास में धार्मिक कारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जैसे— मथुरा, बनारस आदि।
- कुछ नगरों का विकास विशिष्ट उत्पादन के कारण हुआ जैसे— बयाना नी उत्पादन व खेराबाद सूतीवस्त्र के कारण इस प्रकार मुगलकाल में नगरीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता प्रदर्शित होती हैं।

163. मुगलकाल में महिलाओं की दशा की विवेचना कीजिए?

- मुगल समाज पितृसत्तात्मक समाज था अत: हिंदु व मुस्लिम दोनों ही वर्गों में महिलाओं की स्थिति पुरूष से निम्नतर ही रही।
- मुगलकाल में महिलाओं के दो वर्ग थे एक कुलीन व संभ्रांत वर्ग दूसरा सामान्य वर्ग की महिलाएं।
- कुलीन वर्ग में राजपरिवार से या अमीर वर्ग से संबंधित महिलाएँ थी। जिनका जीवन स्तर उच्च था किंतु ये हरम या राजमहल की सीमाओं से बंधी थी। शासक वर्ग में प्रचलित बहुपत्नीवाद से इन्हें प्रतिस्पर्द्धा में जीना पड़ता था।
- यद्यपि कुछ प्रभावशाली महिलाओं ने राजनीति में भूमिका निभाई जैसे गोंडवाना की दुर्गावती। अहमदनगर की चांद बीबी ।
- इसी तरह मुगल हरम की कुछ महिलाओं ने शासन में नियंत्रण रखा जैसे— माहम अनगा, नूरजहां, जहांआरा।
- इस काल में बालविवाह, जबरन विवाह, पैतृक संपत्ति अधिकार न होना, सती प्रथा जैसी कुरीतियों का प्रचलन था। अकबर जैसे शासकों ने इन्हें दूर करने का भी प्रयास किया।

164. अकबर की राजपूत नीति पर टिप्पणी कीजिए?

1. राजपूतों से वैवाहिक संबंधों की स्थापना (आमेर, जेसलमेर, बीकानेर, आदि से वैवाहिक संबंध)
2. राजपूत राजा द्वारा अधिनता स्वीकारने पर अकबर द्वारा मिजवत संबंध ।
3. प्रशासन में राजपूतों को उच्च पद दिये ।
4. दरबार व मंत्रिपरिषद् में राजपूतों को शामिल किया।

5. दरबार में राजपूतों से भेदभाव नहीं।
6. जिन राजकुमारियों से वैवाहिक संबंध स्थापित किये उन्हें हिंदु धर्म मानने की स्वतंत्रता थी।
7. यद्यपि रणथंभौर, मेरठ, चित्तौड़, मेवाड़ के विरूद्ध उसने क्रूर दमन की नीति का पालन किया।

165. अकबर की राजपूत नीति के क्या परिणाम हुए?

1. राजपूतों व मुगलों के संबंधों में सुधार ।
2. राजपूताना में शांति की स्थापना।
3. राजपूतों द्वारा अकर को सैन्य सहायता।
4. राजपूतों की एकता भंग हुई।
5. मुगल अधीनता वीकार करने के कारण राजपूत स्वतंत्र शासन स्थापित नहीं कर सके।
6. हिंद—मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय हुआ।
   इस प्रकार राजपूत नीति के व्यापक इस व दूरगामी परिणाम हुए।

166. अकबर द्वारा धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनानें के कारणों पर चर्चा कीजिए?

1. उदार विचारों वाले पारिवारिक वातावरण का प्रभार
   (पिता व माँ में धार्मिक कट्टरता न होना)
2. शिक्षकों का प्रभाव
   अब्दुल लतीफ (शिया) मुनीम खाँ (सुन्नी) शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करना।
3. विभिन्न धर्माचार्यों का प्रभाव
   (अकबर हिंदु, जैन, पारसी, इसाई धर्मगुरूओं के संपर्क में रहा और सभी के विचारों से प्रभावित हुआ)
4. सूफी व भक्ति आंदोलनों का प्रभाव ।
5. राजपूतों से निरंतर संपर्क के कारण उनकी विचारधारा का भी प्रभाव पड़ा।
6. बिना हिंदु वर्ग को साथ लिए विशाल साम्राज्य की स्थापना असंभव थी अत: उसने उदार धार्मिक नीति अपनाई।
7. इबादतखाने में की गई धार्मिक चर्चाओं ने धर्म के प्रति व्यापक व उदार दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित किया।
8. इस प्रकार अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया।

167. अकबर द्वारा स्थापित दीन—ए—इलाही के स्वरूप पर चर्चा करें?

- 1582 में अकबर ने सभी धर्म प्रमुखों से चर्चा के बाद सभी धर्मों के सार स्वरूप एक नवीन धर्म का प्रतिपादन किया जिसे दीन—ए—इलाही कहा गया।

- **प्रमुख सिद्धांत:—**

1. ईश्वर एक है।
2. धर्म अनुयायियों को अकबर से दीक्षा लेना अनिवार्य ।
3. सूर्य व अग्निपूजा का प्रचलन ।
4. मांस सेवन निषेध।
5. जीवित रहते भोज (श्राद) का आयोजन।
6. अनुयायियों की इच्छानुसार जलाना या दफनाना।
7. दान व उदारता का पालन अनिवार्य।
8. सूत्र वाक्य— अल्ला—हू—अकबर।
   धर्म लोकप्रिय नहीं हो सका और अकबर की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

168. अकबर की धार्मिक नीति के क्या परिणाम हुए?

1. राजपूतों का शासन को समर्थन प्राप्त हुआ।
2. गैर मुस्लिम जनता का अकबर को सहयोग ।
3. हिंदु–मुस्लिम वैमनस्यता में कमी आई।
4. कला साहित्य के क्षेत्र में साझा प्रयास ।
5. हिंदु मुस्लिम साझा संस्कृतिक प्रभाव हुए।
6. धार्मिक कट्टरता में कमी आई।

इस प्रकार अकबर की धार्मिक नीति के दूरगामी राजनीतिक व सांस्कृतिक प्रभाव हुए।

169. एक महान सम्राट के रूप में अकबर पर टिप्पणी कीजिए?

- अकबर द्वारा किए गए निम्न राजनीतिक आर्थिक सामाजिक उन्नति एवं धार्मिक सांस्कृतिक एकता में वृद्धि करने वाले कार्यों के कारण उसे राष्ट्रीय सम्राट के रूप में जाना जाता है–

विशाल साम्राज्य की स्थापना:–

- उसने अपने विजय अभियानों व नीतियों के माध्यम से काबुल, कांधार से लेकर अध्यदनगर तथा पूर्व में सोनार गांव से पश्चिम में सिंध तक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

धार्मिक एकता की स्थापना:–

- धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित सुलह–ए–कुल की नीति , राजपूत नीति व दीन–ए–इलाही धर्म ने वर्गों के मध्य पारस्परिक वैमनस्यता को समाप्त कर धार्मिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया।

सामाजिक सुधार कार्यक्रम:–

- अकबर ने तीर्थ यात्रा कर समाप्ति, विवाह आयु निर्धारण, सतीप्रथा ऐच्छिक करने, दास प्रथा समाप्ति , जबरन धर्म परिर्वतन, पर रोक जैसे सुधार कार्यक्रमों के माध्यम से साम्राज्य में समाजिक एकता की स्थापना की।

आर्थिक नीति:–

- अकबर ने टोडरमल व्यवस्था, वैज्ञानिक भू–मापन, व भू–राजस्व निर्धारण, व पारदर्शी भू–राजस्व नीतियों के माध्यम से आम जन को लाभ के साथ–साथ राजकोष में भी वृद्धि की।
- अकबर ने संपूर्ण राज्य में एक समान कर व्यवस्था का निर्धारण किया।

अकबर के सुधारों से देश के आंतरिक व बाह्य व्यापार में आशातीत उन्नति हुई।

अकबर के व्यक्तिगत गुण:–

- वह दयालु व मृदु स्वभाव का होते हुए एक साहसी सैनिक व महान सेना नायक था।
- उसने संकुचित धर्म के स्थान पर धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया।

वह साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक व व्यवस्थापक था। उसका काल मुगल साम्राज्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।

170. जहांगीर के शासन–प्रशासन में नूरजहां के प्रभाव का वर्णन करें?

- नूरजहां का वास्तविक नाम मेहरून्निसा था। अफगान मिर्जा ग्यास वेग की पुत्री थी। 1611ई. में जहांगीर के नूरजहां के नूरजहां के साथ विवाह के बाद नूरजहां का शासन प्रशासन में हस्तक्षेप बढ़ गया।
- नूरजहां ने पेटीकोट शासन करते हुए ईरानियों को महत्वपूर्ण पद दिलाए। (मिर्जा ग्यास–शाही दीवान, शहरयार– सेनापति पद)
- उसने सेनापति महावत खाँ के विद्रोह को विफल कर दिया।
- नूरजहां के बढ़ते हस्तक्षेप से शहजादा खुर्रम शहजादा शाहजहां आसफ खाँ व मह. ावत खाँ गुट निर्माण।
- जहांगीर की मृत्यु के बाद उसने शहरयार को मुगल सम्राट घोषित कर दिया।
- यद्यपि 1628 में शाहजहां ने आसफ खाँ के सहयोग से गद्दी प्राप्त कर ली।
- नूरजहां को बंदी बना लिया गया।
- इस प्रकार वह कुशल कूटनीतिज्ञ व छाया शासन हेतु प्रसिद्ध हुई।

171. औरंगजेब की दक्षिण नीति मुगल साम्राज्य की समाधि सिद्ध हुआ'' टिप्पणी करें?

या

औरंगजेब की दक्षिण नीति के क्या परिणाम रहे?

1. संपूर्ण उत्तर भारत में अव्यवस्था फैल गई क्योंकि 30 वर्ष के शासन में 25 वर्ष दक्षिण में व्यस्थ रहा अत: उत्तर की सुरक्षा नहीं कर पाया।
2. उत्तर में राजपूत शक्ति का दमन नहीं कर पाया।
3. बीजापुर व गोलकुंड़ा राज्यों के दमन से मराठा शक्ति को उदय का मोका मिल गया।
4. मुगलों की सैन्य शक्ति में ह्रास ।
5. दक्षिण नीति से कृषि, व्यापार को हानि हुई । युद्ध में अत्यधिक व्यय से राजकोष रिक्त हो गया।
6. निष्कर्षत: औरंगजेब की दक्षिण नीति मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

172. औरंगजेब की धामिक नीति के क्या प्रभाव पड़े ?

1. हिंदु–मुस्लिम वैमनस्यता में वृद्धि
2. राजपूत शासक साम्राज्य विरूद्ध हो गए ।
3. आंतरिक विद्रोहों का आरंभ
   (जाट, सतनामी, सिख, मराठा विद्रोह)
4. विद्रोहों को दबाने में राजकोष व्यय
5. अंतत: मुगल साम्राज्य का पतन।

173. मुगल साम्राज्य के पतन के कारण लिखिए–

औरंगजेब के शासन से ही मुगल साम्राज्य में विघटन का दौर आरंभ हो गया।

कारण:–

1. शासन की निरंकुशता व अति केंद्रीयकृत होना
2. औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता ने विद्रोहों को जन्म दिया।

3. औरंगजेब की दक्षिण नीति से उत्तर में अव्यवस्था व आर्थिक संकट।
4. उत्तराधिकार नियमों के आभाव के कारण राज्य प्राप्ति हेतु गुटवाजी व षड्यंत्र
5. औरंगजेब के बाद अधिकोंश उत्तराधिकारी अयोग्य थे।
6. साम्राज्य की विशालता के कारण नियंत्रण कठिन हो गया था।
7. शिवाजी के नेतृत्व में मराठों का प्रभावशाली उत्कर्ष लगातार मराठा संघर्ष से मुगल दुर्बल ।
8. अहमदशाह व नादिरशाह के विदेशी आक्रमण।

मुगल कालीन प्रशासन

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

174. मुगलकालीन केंद्रीय शासन व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

बादशाह—संपूर्ण शासन का सर्वोच्च संप्रभु व निरंकुश शासक राजस्व के दैवीय सिद्धांत समर्थक।

बादशाह की सहायता हेतु मंत्रिपरिषद् होती थी।

मंत्रिपरिषद्—केंद्रीय शासन संचालन में बादशाह को सलाह हेतु मंत्रिपरिषद् थी इसमें अनेक मंत्री होते थे जो प्रशासन के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष थे तथा बादशाह के प्रति उत्तरदायी थे।

केंद्रीय मंत्रिपरिषद् के अंग व उनके प्रमुख—

वकील/वज़ीर— सम्राट का प्रधानमंत्री सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सम्राट को सलाह।

दीवान— वित विभाग का प्रमुख सभी मंत्रियों पर नियंत्रण अनेक उच्च पदों पर नियुक्ति का अधिकार।

मीरबख्शी— सम्राट का प्रधान सेनापति सैन्य भर्ती, प्रशिक्षण, वेतन, अश्व निरीक्षण का अधिकार।

An Institute for MPPSC Examination

खान—ए—समा:— 'शाही प्रबंधन का प्रमुख।

सदर—उस—सुदूर:—प्रधान न्यायाधीश साथ ही शिक्षा व दान विभाग का प्रमुख।

175. मुगलकालीन प्रांतीय शासन व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

संपूर्ण शासन—15 प्रांतों में विभक्त था।

सूबेदार— प्रांत का मुख्य अधिकारी प्राय: राजपरिवार से संबंधित प्रांत में सर्वोच्च निर्णयकर्ता।

प्रांतीय दीवान— प्रांतीय वित प्रमुख सम्राट द्वारा सीधे नियुक्त सूबेदार को शासन सहयोग।

बख्शी— सूबे की सेना का प्रमुख सैन्य भर्ती व नियंत्रण का कार्य।

सद्र— कभी—कभी प्रांतीय काजी व कभी धर्म कानून प्रमूख के रूप में कार्य सम्राट द्वारा नियुक्त।

आमिल— राजस्व कर संग्राहक कृषि भूमि पर नियंत्रण।

कोतवाल— प्रांतीय पुलिस विभाग का प्रधान शांति व्यवस्था निर्माण का कार्य।

वाकायनवीस— प्रांत की सूचनाओं को गुप्त रूप से सम्राट तक भेजने का कार्य।

176. मुगलकालीन स्थानीय शासन व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

प्रांत सरकारों में सरकार परगनों में तथा परगने गांवों में विभक्त थे।

फौजदार— जिले में शांति व व्यवस्था बनाए रखने वाला अधिकारी (मुख्य प्रशासक)

आमिल या अमलगुजार— जिले का वित अधिकारी राजस्व कर एकत्रण का कार्य।

शिकदार— परगने का प्रमुख अधिकारी शांति व्यवस्था व राजस्व वसूली में आमिल की सहायता करना।

मुकद्दय— गांव का प्रमुख अधिकारी पंचायत की मदद से ग्राम प्रशासन चलाता था।

पटवारी— मुकद्दम या चौधरी की सहायता हेतु नियुक्त। ग्राम प्रशासन की मूल इकाई थे।

177. अकबर द्वारा आरंभ मनसबदारी व्यवस्था पर टिप्पणी करे?

- मनसब का अर्थ होता है—पद तथा मनसबदार का आशय पदाधिकारी से है।
- मनसबदारी प्रथा का आरंभ अकबर ने 1567 ई. में किया ।
- मनसबदारी सैन्य व प्रशासनिक दायित्वों की पूर्ति करते थे।
- मनसबदारी व्यवस्था में जात व सवार रैंक होती थी।
- जात की आशय —मनसबदार की श्रेणी से था।
- इसी से उसका वेतन निर्धारित होता था।
- सवार से आशय उसके द्वारा रखी जाने वाली सेना से था।
- मनसबदारों की 3 मुख्य श्रेणियाँ थी—

1. 10–500 जात—मनसबदार
2. 500–2500जात—अमीर
3. 2500 से अधिक जात— अमीर—ए—आजम।

5000 से ऊपर जात राजपरिवार हेतु सुरक्षित मनसबदारों को उनका वेतन नकद व जागीर दोनों ही रूप में दिया जाता था।

178. मुगलकालीन न्यायव्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए?

- बादशाह न्याय व्यवस्था का सर्वोच्च अधिकारी था।
- बादशाह के बाद काजी मुख्य न्यायाधीश होता था।
- काजी की सहायता हेतु मुक्ती नामक न्यायाधिकारी होते थे।
- प्रांतों में प्रांतीय सद्र न्याय का कार्य करते थे।
- ग्रामीण न्याय व्यवस्था पंचायत पर आधारित थी।
- अकबर ने हिंदू पंडितों को हिंदू मुकदमों में निर्णय हेतु नियुक्त किया।
- जहांगीर ने त्वरित न्याय हेतु न्याय की जंजीर लगवाई थी।

179. अकबर द्वारा भू—राजस्व निर्धारण की दहसाला व्यवस्था पर टिप्पणी करें?

इस प्रणाली का प्रतिपादन टोडरमल ने किया जिसे अकबर ने 1580 में लागू किया।

- भूमि मापन हेतु इलाही गज (41 अंगुल) प्रयोग।

- भूमि का उपज आधारित वर्गीकरण किया गया।
- पिछले 10 वर्षों के औसत का 1/3 भू–राजस्व के रूप में निर्धारित।
- राजस्व संग्रहण के कार्य से मध्यस्थों को हटा दिया गया।
- राजस्व नकद या अनाज दोनों रूप में करने की व्यवस्था थी।
- आपात स्थिति में लगान दर में कमी या छूट का प्रावधान।

180. मुगलकालीन कृषि पर टिप्पणी कीजिए?

- मुगल अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि थी।
- आइन–ए–अकबरी रबी की 16 व खरीफ की 25 फसल से प्राप्त राजस्व का उल्लेख करता है।
- गन्ना, कपास, नील, रेशम आदि नकदी फसलें भी प्रचलित थी।
- कृषि उत्पादन वृद्धि हेतु उत्तम बीज खाद व तकावी ऋण वितरित किए जाते थे।
- शाहजहां द्वारा सिंचाई हेतु नहरों का निर्माण।
- भारत में विदेशी फसलों तंबाकू, मक्का, कॉफी आलू, लालमिर्च आदि का उत्पादन भी होता था।
- बंगाल गन्ना व जूट, वयाना, नील, कश्मीर केसर की कृषि हेतु प्रसिद्ध था।

181. मुगलकालीन व्यापार–वाणिज्य के विकास पर चर्चा करें?

- मुगलकाल में आंतरिक व बाह्य दोनों ही व्यापार का विकास हुआ।
- साम्राज्य का मुख्य व्यापारिक मार्ग आगरा– अहमदाबाद–सूरत था।
- थोक व्यापारी सेठ, खुदरा वानिक व दक्षिण में चेट्टिट व्यापारिक समुदाय थे।
- मुगलकाल में चुंगी की दर 3.5 प्रतिशत थी।
- वस्तु विनिमय का माध्यम हुंड़ी (अल्पकालिक ऋणपत्र) था।
- नील, शोरा, अफीम, सूती वस्त्र मुख्य निर्यातित वस्तुएँ थी।
- सोना, चांदी, घोडा, रेशम का आयात किया जाता था।
- व्यापार जल व स्थल दोनों मार्गों से होता था।
- सूरत, भड़ौच व सोनारगांव प्रमुख बंदरगाह थे।

182. मुगलकालीन मुद्रा व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए?

अकबर ने दिल्ली में साही टकसाल का निर्माण कराया।

अकबर द्वारा चलाइ गई मुद्राएँ–

1. मुहर–स्वर्ण निर्मित सिक्का
2. शंसब– अकबर द्वारा 101 तोले का स्वर्ण सिक्का
3. इलाही–सोने का गोलाकार सिक्का

- रूपये–शेरशाह द्वारा रठद्ध चांदी का सिक्का
- निसार–जहांगीर द्वारा तांबे का सिक्का
- आना–शाहजहां द्वारा चांदी का सिक्का।

मुगल संस्कृति : कला एवं साहित्य

183. मुगलकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएँ लिखिए?

मुगल स्थापत्य कला में हिंदू–मुस्लिम साझा संस्कृति प्रदशित होती है जो इस प्रकार है–

- भारतीय श्राबियत शैली के साथ मुगल आरकुएट शैली का समन्वय दिखता है।
- नवीन इंड़ो इस्लामिक स्थापत्य का उदय होता है।
- मेहराब व दोहरे गुंवदों का प्रयोग आरंभ हुआ।
- इमारत में ऊची मीनारों का निर्माण किया गया।
- सजावट की पित्रादुरा शैली का प्रयोग आरंभ ।
- लालबलुआ पत्थर के साथ–साथ संगमरमर प्रयोग किया गया।
- प्रमुख इमारतें–एतमादुहदौला मकबरा, लालकिला, ताजमहल, मोती मस्ज़िद दत्यादि थी।

184. शाहजहां का काल मुगल स्थापत्य का स्वर्ण युग था''। कथन की समीक्षा कीजिए?

शाहजहां के काल में मुगल वास्तुकला अपने चरमोत्कर्ष में पहुँच गई।

1. **मोती मस्ज़िद:–** आगरा किले में निर्मित दाहरे गुबंद , विशाल प्रांगण, संगमरमर का बरामदा।
2. **जामा मस्ज़िद (आगरा):–1648 में आगरा किले के पश्चिमी भाग में निर्मित संगम. रमर का प्रयोग।**
3. **दिल्ली का लाल किला:–**3100×1650 फीट^2 क्षेत्रफल पर निर्मित दीवान–ए–खास, रंगमहल, दीवान–ए–आम प्रमुख इमारतें।
4. **जामा मस्ज़िद (दिल्ली):–**विशाल चबूतरे पर निर्मित लाल, काले व सफेद पत्थरों का प्रयोग।
5. **ताजमहल (आगरा):–**सफेद संगमरमर निर्मित ऊँची मीनारों , दोहरे गुंबद का प्रयोग पित्राद्युरा तकनीक का प्रयोग।

शाहजहां कालीन इमारतें भव्य व इंद्रो–इस्लामिक शैली की सभी विशेषताओं को समन्वित करती है। अत: यह काल मुगल स्थापत्य का स्वर्णकाल कहा गया है।

185. ''जहांगीर का काल मुगल चित्रकला का चरम था'' कथन की व्याख्या करें?

जहांगीर स्वयं भी चित्रकला का पारखी था उसके काल की चित्रकला निम्न थी–

1. जहांगीर कालीन चित्रकला ज्यादा यथार्थवादी स्वरूप प्रदर्शित करती है।
2. दरबार के साथ प्रकृति व मानव एकल चित्र।
3. चौड़े हासियों का प्रयोग किया गया।
4. एक ही चित्र में अनेक चित्रकारों के योगदान का प्रचलन आरंभ हुआ।
5. चटकीले रंगों का अत्यधिक प्रयोग हुआ।

यह मुगल चित्रकला की सभी विशेषताओं को समाहित करती है।

ज्हांगीर के बाद से मुगल चित्रकला का पतन आंरभ होता है तथ औरंगजेब के काल तक यह पूर्णत: लुप्त हो जाती है।

186. अकबर का शासन काल साहित्यिक उन्नति का काल था'' सिद्ध कीजिए?

- तुर्की, फारसी, हिंदी, संस्कृत सभी भाषाओं का विकास काल।
- अकबर के दरबार में 58 श्रेष्ठ कवि थे।

- फारसी भाषा में आइनें अकबरी, अकबरनामा, तबकात–ए–अकबरी, तोहफा–ए–अकबरशाही की रचना ।
- महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, हरिवंश पुराण के फारसी अनुवाद हुए।
- हिंदी में पद्मावत, रामचरितमानस, सूरसारावली आदि उच्चकोटि के ग्रंथ लिखे गए।
- अकबर का काल हिंदी कविता का स्वर्णयुग थी कहा जाता है।

मराठा साम्राज्य

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

187. शाहजी गोखले (1594-1602)

- छत्रपति शिवाजी के पिता
- प्रारंभ में अहमदनगर के सुल्तान के सैनिक
- अपनी योग्यता द्वारा पूना की जागीरदारी प्राप्त की।

188. पुरंदर की संधि

- 24 जून 1665 में शिवाजी व जयसिंह के मध्य
- इसके अनुसार शिवाजी को अपने 33 में से 23 किले मुगलों को देने पड़े।
- उनके पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में 3000 का मक्सव दिया गया।
- शिवाजी ने मुगलों की तरफ से बीजापुर के विरुद्ध युद्ध व सेवा का वचन दिया।

189. चौथ

- मराठा साम्राज्य द्वारा लगाया गया कर।
- पड़ोसी राज्य से उनकी रक्षा के बदले वसूला जाने वाला कर।
- कुल राजकीय आय का एक चौथाई।

190. सरदेश मुखी

- छत्रपति शिवाजी द्वारा आरोपित कर प्रणाली।
- शिवाजी महाराष्ट्र के पुश्तैनी सरदेशमुखी अत: विजित क्षेत्रों से अर्जित कर –सरदेशमुखी।
- कुल राजकीय आय का 10%

191. अष्टप्रधान

- निरंकुश मराठा राजतंत्र में राजा की सहायता हेतु स्थापित मंत्रीपरिषद्।
- इसमें आठ मंत्री होते थे, जिनका प्रधान **पेशवा** था।
- अन्य–अमात्य, वाकिमानवीय, दाविर चिटनिस आदि।

192. देशमुख

- मराठा प्रशासन में परगना के प्रमुख के देशमुख कहा जाता था।
- मराठा प्रांतों का विभाजन तरफ या परगना में।
- परगना को अंतत: मौजा में विभक्त किया गया था।

193. पटेल

- मराठा प्रशासन में महत्वपूर्ण प्रशासनिक अधिकारी।
- ग्रामीण प्रशासन का प्रमुख।
- यह ग्रामीण प्रशासन के कर संबंधी, न्यायिक तथा प्रशासनिक कार्य करता था।

194. ताराबाई (1700-1708 ई)

- राजा राम की मृत्यु के पश्चात् उसकी विधवा ताराबाई अपने 4 वर्षीय पुत्र शिवाजी—द्वितीय के नाम से मराठा सिंहासन पर बैठी।
- ताराबाई के काल में मराठों का पुन: उत्थान।
- 1707 में स्वेश के युद्ध में याहू ताराबाई को पराजित कर छत्रपति बन गया।

195. पानीपत का तृतीय युद्ध

- मराठों तथा अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली के मध्य 1761 में।
- अवध के नवाब शुजाउद्दौल्ला तथा सादुल्ला खाँ ने अब्दाली को समर्थन दिया।
- इस युद्ध में मराठो की पराजय तथा अब्दाली की विजय हुई।

196. वसीन की संधि 1802 ई

- इसके तहत् मराठो ने अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर 6000 अंग्रेजी सेवा को पूना में रखना स्वीकार किया।
- इस सेवा के बदले उसने सूरत तथा 26 लाख वार्षिक आय वाला क्षेत्र अंग्रेजों को दे दिया।
- अपने विदेशी मामले मराठों ने अंग्रेजी कंपनी के अधीन कर दिये तथा निजाम में चौथ वसूलने का अधिकार भी अंग्रेजों को दे दिया।

5 □□ां □□प्रश्नोत्तर

197. मराठों के उत्कर्ष के कारण लिखिए?

1. महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति प्राकृतिक दुर्ग के समान होना ।
2. मराठों का रणकुशल व सैन्य अनुभव होना।
3. महाराष्ट्र में तुकाराम, एकनाथ, रामदास जैसे संतों द्वारा धार्मिक जागरण।
4. मराठों की गोरिल्ला युद्ध प्रणाली।
5. दक्षिण के राज्यों की दुर्बलताएँ।
6. मराठा क्षेत्र में भाषायी एकता का होना।
7. औरंगजेब की नीतियों के विरूद्ध संगठित होने का भाव।
8. शिवाजी का सुयोग्य नेतृत्व होना।

उपरोक्त परिस्थितियों में मराठा नवीन शक्ति बनकर उभरे।

198. शिवाजी के विजय अभियानों का उल्लेख करें?

प्रथम चरण (1645–1655ई.):—
इसके तहत सिंहगढ़ दुर्ग, पुरंदर, जावली, तोरण, कोंकण पर अधिकार कर लिया।
द्वितीय चरण (1656–66ई.):—

- विजय का वास्तविक दौर आरंभ हुआ।
- 1656 में रायगढ़ को राजधानी बनाया।
- जावली विजय (1656), प्रतापगढ़, रायगढ़ दुर्गविजय, जुन्नार, अहमद नगर लूट (1656), कोंकण , कल्याणी पर अधिकार (1656), कोलाबा विजय, पुर्तगाली कर्नाटक पर आक्रमण (1658), अफजल खां से संघर्ष (1659),।

इस प्रकार उन्होंने सुदृढ़ शासन की नींव रखी।

199. पुरंदर संधि के प्रमुख प्रावधानों का उल्लेख करें?

यह संधि 1665ई. में शिवाजी व महाराजा जयसिंह के मध्य हुई।

- शिवाजी अपने 35 किलों में से 23 मुगल अधिकार में सौंपेंगे।
- वे मुगल शासन के प्रति वफादार रहेंगे।
- उनके पुत्र संभाजी को 5हजारी मनसब दिया गया।
- बीजापुर व दक्कन के विरूद्ध मुगलों की सहायता करेंगे।

शिवाजी ने 1666ई. में ही आगरा प्रस्थान के बाद पुरंदर संधि तोड़ दी।

200. अष्टप्रधान पर टिप्पणी लिखें?

या

शिवाजी कालीन केंद्रीय प्रशासन पर टिप्पणी लिखिए?

- राजा— शिवाजी केंद्रीय शासन के प्रमुख थे। राज्य की समस्त शक्तियाँ शिवाजी के हाथों केंद्रित थी। राजा की सहायता हेतु एक मंत्रिपरिषद् थी।
- अष्टप्रधान— शिवाजी के मंत्रिपरिषद् जिसमें ८ मंत्री थे जिनको अष्टप्रधान कहा गया। ये शासन प्रशासन संचालन में शिवाजी की सहायता करते थे—

1. पेशवा— यह राज्य का प्रधानमंत्री था और राजा के बाद सर्वोच्च निर्णायक था।
2. आतात्य— यह वित अथवा राजस्व मंत्री था।
3. वाकायनवीस— यह दरबार की कार्यवाही का विवरण रखता था।
4. सचिव— यह राजकीय पत्र व्यवहार हेतु उत्तरदायी था।
5. सुमंत— यह विदेश मंत्री था जो विदेश मामलों में सलाह देता था।
6. सर—ए—नौबत— यह सैन्य विभाग का प्रमुख अधिकारी था।
7. पंडितराव— यह धर्म व दान विभाग का प्रमुख था।
8. न्यायाधीश— यह न्याय विभाग का प्रमुख था।

सभी मंत्रियों को राजकोष से नकद वेतन दिया जाता था।

201. शिवाजी कालीन भू—राजस्व व्यवस्था पर टिप्पणी करें?

- शिवाजी के राजस्व के प्रमुख स्त्रोत लगान चुंगी कर, बिक्री कर चौथ व सरदेशमुखी थे।
- चौथ एक प्रकार का सैनिक कर था जो विजित क्षेत्रों से सैनिक सुरक्षा के बदले वसूला जाता था।
- चौथ आय का 1/4 हिस्सा था।
- सरदेशमुखी वार्षिक आय का 1/10 हिस्सा वसूला जाता था।यह उन क्षेत्रों से लिया जाता था। जो मराठा राज्य को उनका प्रमुख मानते थे।
- 1677 में अंताजी दत्तो के नेतृत्व में संपूर्ण मराठा भूमि का सर्वेक्षण कराकर लगान की राशि निर्धारित की गई।
- भू—वर्गीकरण के बाद भूमि कर उपज का 33% निर्धारित किया गया।
- शिवाजी के शासन में भू—कर निर्धारण हेतु बटाई पद्धति का प्रचलन था। तथा भू—पैमाइश हेतु काठी का प्रयोग किया जाता था

202. मराठा राज्य के निर्माता के रूप में शिवाजी का मूल्यांकन कीजिए?

- आदर्श एवं उच्च व्यक्तित्व— दयालुता, सहिष्णुता, साहस, शौर्य, स्त्री व गुरू सम्मान के गुण विद्यमान थे।
- कुशल सेनानायक— उन्होंने मराठा सेना को सुसंगठित व अनुशासित किया। उन्होंनं एक विशाल व स्थाई सेना गठित की वे छापामार युद्ध प्रणाली में पारंगत थे तथा सैन्य नेतृत्व में कुशल थे।
- सफल कूटनीतिज्ञ—उन्होंने बीजापुर, गोलकुंड़ा, पुर्तगालियों, मुगलों के विरूद्ध कूटनीतिक निपुणता से कार्य लिया और साम्राज्य स्थापना में सफल रहे।
- राष्ट्र निर्माता के रूप में—शिवाजी ने मराठों को एक राष्ट्र के रूप में संगठित किया। उन्होंने धर्मांध मुगल शासकों की नीतियों के विरूद्ध हिंदू धर्म की रक्षा की। संपूर्ण मराठा क्षेत्र को एकता के सूत्र में बांध दिया।

इस प्रकार शिवाजी महान विजेता कुशल प्रशासक प्रजावत्सल तथा राष्ट्र निर्माता थे।

203. पानीपत युद्ध में मराठों की विफलता के कारणों की चर्चा कीजिए?

पानीपत तृतीय युद्ध 14 जनवरी 1761 ई. में मराठा बालाजी बाजीराव व अहमदशाह अब्दाली के मध्य हुआ जिसमें मराठा सेना की हार हुई।

मराठा विफलता के कारण—

1. उत्तर भारत से मराठों द्वारा रिंतर धन दोहन के कारण उत्तर की सभी शक्तियां मराठों से क्षुब्ध हो गई थी। अत: युद्ध में मदद नहीं की।
2. बालाजी बाजीराव के काल तक मराठों ने हिंदू पद बादशाही का उद्देश्य छोड़ दिया अत: हिंदू शक्तियों ने समर्थन नही दिया ।
3. मराठा नेतृत्व ने अवध और रूहेला राज्य के मध्य विद्यमान मतभेद का लाभ नहीं उठाया और ये दोनों राज्य मराठों के विरूद्ध हो गए।
4. मराठों द्वारा परंपरागत भालें तलवारों का हथियार में प्रयोग जबकि अफगानों द्वारा बंदूकों का प्रयोग।
5. युद्ध मैदान का गलत चयन—मल्हार राव होल्कर के सुझाव के अनुसार युद्ध मध्य भारत में किया जाना चाहिए। ताकि त्वरित मदद पहुंच सके।

इस प्रकार पानीपत युद्ध में मराठों की हार हुई और उन्हें पुन: उभरने में 40 वर्ष लग गए।

204. पानीपत के तृतीय युद्ध के क्या परिणाम हुए?

पानीपत के युद्ध के निम्न राजनीतिक परिणाम प्रदर्शित हुए—

- मराठा शक्ति का गहरा आघात पहुंचा और मराठा साम्राज्य के प्रसार का स्वप्न चूर हो गया।
- पेशवा के अधीन केंद्रीकरण के प्रयास का अंत हो गया।
- होल्कर, सिंधिया, भोसले, गायकवाड़ के अधीन क्षेत्रीय शक्तियों को बल मिला।
- उत्तर भारत में मराठा शक्ति की अनुपस्थिति ने ब्रिटिश कंपनी की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
- उत्तर पश्चिम में राजनीतिक शून्यता को भरने हेतु सिख राज्य की स्थापना हुई।
- इसने यह भी सिद्ध कर दिया की मुगल शक्ति अपना आस्तित्व खो चुकी है।

इस प्रकार यह कहा जाता है कि पानीपत के तीसरे युद्ध का लाभ अफगानों को न होकर ब्रिटिश व सिखों को हुआ।

❖ ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

205. स्थायी बन्दोबस्त

- 1793 ई. में लार्ड कर्नवालिस द्वारा लागू की गई भू–राजस्व प्रणाली
- बंगाल,बिहार,उडीसा मे लागू की गई
- जमींदार को भू–स्वामी मानकर भू–राजस्व की वसूली की जिम्मेदारी उसे दी गई।

206. तिनकठिया पद्धति

- ब्रिटिशकाल मे पूर्वी भारत में लागू की गई कृषि की एक प्रणाली
- इसमे किसानो को अपनी जमीन के 3/20 भाग पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था

207. रैययतवाडी प्रणाली

- औपनिवेशिक काल में लागू की गई भू–राजस्व की एक व्यवस्था
- इसमें किसानों को भू–स्वामी मानकर उसे ही व्यक्तिगत रूप से भू–राजस्व भुगतान के लिए उत्तदायी बनाया गया।
- इस प्रणाली का जन्मदाता थामन मुनरो एवं कैप्टन रीड थे।

208. महालवाडी व्यवस्था

- ब्रिटिश काल मे उत्तर भारतीय क्षेत्र में लागू की गई भू–राजस्व प्रणाली
- इस प्रणाली में संपूर्ण गॉव(महाल) को भू–राजस्व भुगतान हेतु उत्तरदायी बनाया गया।

209. धन का निष्कासन सिद्वांत

- विभिन्न कारणो से भारतीय धन के ब्रिटेन की और प्रवाह को धन का निष्कासन सिद्वांत कहा गया।
- सर्वप्रथम इसका वर्णन दादाभाई नौरोजी ने अपने लेख इंग्लैण्ड डेब्ट टू इंडिया में किया।

210. आर.सी.दत्त

- आधुनिक काल के प्रसिद्व आर्थिक इतिहासकार
- इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया नामक पुस्तक लिखी।

211. कृषि का वाणिज्यीकरण

- 19वी शताब्दी में विभिन्न कारणो से कृषि क्षेत्र में कुछ फसलों का उत्पादन उपभोग हेतु नही बल्कि राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए किया जाने लगा। इसे ही कृषि का वाणिज्यीकरण कहा गया।

212. भारत से धन निकासी के विभिन्न घटक क्या थें

- ब्रिटिश अधिकारियों को दिया जाने वाला वेतन व अन्य भुगतान
- ब्रिटिश पूँजी पर दिया जाने वाला व्याज
- कंपनी के भागीदारो को दिया जाने वाला लाभांश
-

213. हण्टर शिक्षा आयोग

- प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की प्रगति की समीक्षा हेतु गठित आयोग।
- इसका गठन 1882 में किया गया।

214. लार्ड विलियम बैंटिंक द्वारा किये गये प्रमुख सामाजिक सुधार

- सति प्रथा पर रोक
- बालिका हत्या पर रोक
- दास प्रथा तथा मानव बलि प्रथा पर रोक

215. वुड्स डिस्पैच

- 1854ई. में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष चार्ल्स वुड ने भारत की भावी शिक्षा की एक योजना तैयार कर गवर्नर जनरल लार्ड उलहौजी को भेजी,इसे ही वुड्स डिस्पैच कहा गया।
- इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया।

216. भारत का प्रथम समाचार पत्र कब तथा किसके द्वारा प्रकाशित किया गया।

- प्रथम समाचार पत्र द बंगाल गजट था।
- 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा प्रकाशित किया गया था।

5 □□ां □□प्रश्नोत्तर

217. आधुनिक शिक्षा के प्रसार में प्राच्य एवं पाश्चात्य विवाद क्या था?स्पष्ट कीजिए।

- ब्रिटिश भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रसार के निर्धारण में प्राच्यवादी (ओरियन्टलिस्ट) तथा पाश्चात्यवादी (ऑक्सीडेनटलिस्ट) समर्थकों में विवाद उत्पन्न हुआ।
- प्राच्यवादी लोगों की मान्यता थी कि भारत में पाश्चात्य ज्ञान—विज्ञान की शिक्षा देशी भाषाओं में दी जानी चाहिए
- इनका मत था कि शिक्षा की व्यवस्था उस भाषा में होनी चाहिए जिससे भारतीय परिचित है।
- इसके विपरीत पाश्चातयवादी दृष्टिकोण यह ाा कि प्राच्य शिक्षा पद्वति लाभकारी साबित नही हो सकती,अत: भारत में अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य विचारधारा व साहित्य का प्रसार किया जाना चाहिए। मैकाले इस विचारधारा का प्रमुख था।

218. शिक्षा का अधोमुखी निस्यंदन सिघांत क्या था? स्पष्ट कीजिए।

- आधुनिक शिक्षा के प्रसार में अॅग्रेजो ने शिक्षा की व्यवस्था मुख्यत: उन वर्गो के लिए की जो उच्च वर्गो का प्रतिनिधित्व करते थे।
- इसके पीछे उनका दृष्टिकोण यह था कि यदि समाज का उच्च वर्ग पाश्चात्य परंपरा को ग्रहण कर लेगा तो निम्न वर्ग उसका अनुसरण करेगा।
- भारत में 1870 ई. तक इस नीति के अनुरूप कार्य किया गया। इस प्रकार सीमित साधनो में साम्राज्यवादी हितो की पूति की गई।
- अंग्रेजो की इस नीति को ही शिक्षा का अधोमुखी निस्यंदन सिषांत कहा गया।

219. ब्रिटिशकालीन मुक्त व्यापार नीति एवं उसके परिणाम पर प्रकाश डालिए।

- 1813 ई. में चार्टर एक्ट द्वारा भारत पर कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया तथा भारतीय बाजारों को अन्य अंग्रेजी व्यापारियों के लिए भी मुक्त कर दिया गया।

- मुक्त व्यापार की नीति 1813ई. से 1857ई. तक जारी रही।
- इस काल में इंग्लैण्ड में बने माल भारतीय बाजारों में बिना किसी आयात शुल्क के आने लगे,जबकि भारतीय व्यापारियों के माल पर इंग्लैण्ड में आयात शुल्क के नाम पर बडी राशि वसूल की जाने लगी।
- इस नीति से भारतीय कारीगरों तथा व्यापारियों की स्थिति दयनीय हो गयी।
- ब्रिटिश संसद की यह कार्यवाही आर्थिक साम्राज्यवाद का एक अंग थी।
- आयात शुल्क में बढोत्तरी का एक प्रमुख कारण यह था कि अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय व्यापारी कच्चा माल अंग्रेजो को बेचें,जिससे इंग्लैण्ड की औघोगिक क्रांति सफल हो सके
- कंपनी की आर्थिक नीतियों में मुक्त व्यापार की नीति सर्वाधिक हानिकारक मानी जाती है।

220. ब्रिटिश काल में भारतीय हस्तशिल्प उघोग के पतन के कारण बताईये।

- भारत में मुक्त व्यापार नीति लागू की गई,जिसके उपरान्त इंग्लैण्ड में भारतीय वस्तुओ पर अधिक शुल्क लगाया गया तथा भारत में इंग्लैण्ड की वस्तुओ पर कम शुल्क।
- भारत को अंग्रेज व्यपारियों द्वारा कच्चे माल के स्रोत तथा तैयार माल के बाजार के रूप में उपयोग किया गया।
- रेल्वे आदि परिवहन के साधनो के विकास से भारतीय कच्चा माल ले जाना तथा तैयार माल भारतीय बाजार में लाना आसान हो गया।
- भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तन से शिक्षित भारतीय भी विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षित होने लगे तथा भारतीय वस्तुओं का उपयोग कम हुआ।
- ब्रिटेन के उघोगों में निर्मित वस्तुओं का मुकाबला भारतीय हस्तशिल्प उघोग नही कर सका,क्योकि उनहे किसी प्रकार का शासकीय संरक्षण प्रदान नही किया जाता था।

221. ब्रिटिश काल में यातायात और संचार के साधनों के विकास का वर्णन कीजिए।

- उन्नीसवीं सदी के पूर्वाद्व तक भारत में यातायात और संचार व्यवस्था बहुत कमजोर थी,संचार व यातायात का पर्याप्त विकास नही हुआ था।
- इंग्लैण्ड की औघोगिक क्रांति को सफल बनाने के लिए अंग्रेजी माल को भारतीय बाजारो तक पोहचाने तथा कच्चे माल को इंग्लैण्ड तक पोहचाने के लिए परिवहन व संचार व्यवस्था की आवश्यक्ता अंग्रेजो को मेहसूस हुई।
- तत्पश्चात भारत में यातायात के साधनों का विकास प्रारंभ हुआ।
- 1839 ई. में कलकत्ता से दिल्ली के मध्य ग्रांड ट्रंक रोड बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ, गहरी नदियों में स्टीमर चलाये गये, जिससे यातायात सुगम हुआ।
- गवर्नर जनरल लार्ड डलहोजी के प्रयासो से भारत में 1853ई. में बंबई से थाणे तक पहली रेल लाईन बिछाई गयी,तत्पश्चात अन्य क्षेत्रो में भी रेलवे का जाल बिछाया गया।
- डलहौजी द्वारा संचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करते हुए 1853 ई.में कलकत्ता और आगरा के बीचतार लाईन(टेलीग्राफ) का निर्माण किया गया।
- इसी प्रकार 1854 ई. में पोस्ट ऑफिस एक्ट पारित किया गया। जिसके तहत डाक व्यवस्था में सुधार करते हुए समस्त डॉकघरो में डायरेक्टर जनरल की नियुक्ति की गई।

222. स्थायी बन्दोबस्त तथा इसके प्रावधानों का वर्णन कीजिए।

- गवर्नर लार्ड कार्नवालिस ने सर जॉन शोर के सहयोग से 22 जनवरी 1793ई. को भू–राजस्व की स्थायी बन्दोबस्त योजना की घोषणा की।

- इस बन्दोबस्त में जमींदार को भू–स्वामि मारकर उसे भूमि से संबंधित अधिकार दिये गये एवं वही भू–राजस्व वसूली एवं प्रशासन को उसके भुगतान हेतु जिम्मेदार था।
- स्थायी बन्दोबस्त में स्पष्ट किया गया कि जमींदार को प्राप्त भू–राजस्व का $10/11$ भाग सरकार को देना होगा,जबकि $1/11$ भाग जमींदार का होगा।
- निश्चित समयावधि में जमींदार द्वारा भू–राजस्व अदा नहीं करने की स्थिति में इसकी भूमि का एक अंश कुर्क या विक्रय किया जा सकता था।
- इस व्यवस्था से कृषक जमींदारों के हाथो की कठपुतली बन गए एवं उनका
- जमींदारो ने बहुत शोषण किया।

223. भू–राजस्व की स्थाई बन्दोबस्त प्रणाली से अंग्रेजो को क्या लाभ प्राप्त हुए?चर्चा कीजिए

- स्थाई बन्दोबस्त से कम्पनी को भू–राजस्व के रूप में मिलने वाली आय निश्चित हो गई,जिससे वह अपना ध्यान प्रशासन की और दे पाये।
- इस व्यवस्था के कारण जमींदार वर्ग कम्पनी के कटटर समर्थक बन गये जिसका लाभ अंग्रेजो को अन्य मामलो में भी हुआ।
- स्थायी बन्दोबस्त के माध्यम से कार्नवालिस ने कम्पनी के कर्मचारियों के भ्रष्टाचार,लूट तथा रिश्वत को नियंत्रित किया जिसे एक बडी उपलब्धि माना जा सकता है।
- जमींदारो वर्ग भी भू–राजस्व निश्चित हो जाने से कृषि कार्य और उत्पादन को बढाने की दिशा में सक्रीय हुए जिससे कलान्तर में जनता की अर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
- कम्पनी को राजस्व वसूली में सुविधा हो गयी। इसके पूर्व राजस्व वसूली हेतु कम्पनी को अधिक संख्या में कर्मचारी रखने पडते थे।

224. भू–राजस्व की रैययतवाडी प्रथा पर प्रकाश डालिए ?

- मद्रास के गवर्नर सर टामस मुनरो और एक अंग्रेज अधिकारी केप्टन रीड ने भारत के दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम प्रांतो (बंबई,सिंध,मद्रास) में भू–राजस्व वसूली की जिस व्यवस्था को लागू किया वह रैययतवाडी प्रथा कहलाई।
- इसके अंतर्गत कृषक तथा सरकार के मध्य किसी मध्यस्थ का प्रयोग न कर सीधे किसान को भूमि का स्वामी मान उसे ही भू–राजस्व भुगतान हेतु जिम्मेदान माना गया।
- इसके तहत ब्रिटिश सरकार ने इन क्षेत्रो में कृषि योग्य भूमि का सर्वेक्षण कराया तथा प्रत्येक रैययत की भूमि का नम्बर प्रदान कर कृषि को व्यवथित कर राजस्व का निर्धारण किया।
- यह एक अच्छी पहल थी,यघपि इसका उददेश्य आर्थिक शोषण था,किन्तु इस प्रक्रिया से कृषकों को कुछा लाभ अवश्य मिला।

225. भू–राजस्व की माहलवारी प्रथा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

- ब्रिटिशकाल में पंजाब,मध्य प्रांत तथा उत्तर पश्चिमी प्रांतो मे भू–राजस्व की जो व्यवस्था लागू की गई वह महलवारी प्रथा कहलाई।
- इस प्रथा के तहत ग्राम या महाल के साथ भू–राजस्व को तक किया गया तथा इसकी वसूली ग्राम या महाल को इकाई मानकर की गई।
- इस प्रथा के तहत प्रत्येक कृषक भूमि की उर्वरता के अनुसार भू–राजस्व की अदायगी हेतु बाध्य था,भू–राजस्व को जमींदार या मालगुजार एकत्रित कर ब्रिटिश शासन को प्रदान करता था।

- इस व्यवस्था के बाद भूमि भी सम्पत्ति मान ली गई और कृय विक्रय किया जाने गला,जो भारतीय इतिहास में एक नयी प्रवृति थी,चूँकि इसके पूर्व भूमि निजी सम्पत्ति कभी स्वीकार नही की गई।
- इस प्रथा से किसानो का अत्यधिक शोषण हुआ ,उन्हे जमीनो से बेदखल किया जाने लगा तथा जमीन साहूकार तथा महाजनो के हाथों में संचित होने लगी।
- इस प्रकार जमीन या कृषि योग्य भूमि के अधिकारी वे हो गये जो कृषि कार्य करते ही नही थें,जबकि परंपरागत कृषक दरिद्र हो गये।

226. ब्रिटिश भारत में कृषि के वाणिज्यीकरण के विभिन्न कारणो का वर्णन कीजिए।

- नकद तथा वाणिज्यिक फललों की मांग दिन प्रतिदिन देश–विदेश में बढना।
- परिवहन के साधनो के विकास से नकद फसलो का परिवहन आसान हुआ।
- भू–राजस्व के नकद भुगतान के लिए मुद्रा प्राप्ति आवश्यक हुई जिससे अनाजो को बेचा जाना आवश्यक हुआ।
- विदेशी व्यापार में हुई प्रगति
- चाय,नील,गन्ना,तम्बाकू आदि नकदी फसलो का स्थानीय क्षेत्रो में उपभोग होना संभव नही था,जिस कारण इन फसलो का प्राय: बेचा ही जाता था।

227. भरत से ब्रिटेन की और होने वाले धन के निष्कासन के क्या परिणाम सामने आये? संक्षिप्त उल्लेख कीजिएं।

- दादा भाई नौरोजी के अनुसार धन का निष्कासन भारत की गरीबी का सबसे बडा कारण बना।
- धन निष्कासन के कारण भारत में विदेशी पूँजी का ऐंकाधिकार स्थापित हो गया,बिटिश पूँजीपतियो ने भारत में अपनी पूँजी लगाई तथा उसका सारा लाभ इंग्लैण्ड की और गया।
- धन निष्कासन से पूँजी संचय में कमी आई जिससे देश में आय तथा रोजगार पर बुरा प्रभाव पडा।
- धन निष्कासन से कृषि के लिए भी पूँजी का अभाव पैदा हो गया जिससे कृषि में पिछडेपन की प्रवृति बढी।
- इससे भारतीयों के पास धन का अभाव हुआ और औघोगीकरण में बाधा आई।
- धन निष्कासन का किसानो तथा मजदूरो पर भी नकारात्मक प्रभाव पडा। किसानो से सदैव अधिक भू–राजस्व वसूला जाता था जिससे वे सदैव कर्ज मे ही डूबे रहते थे

228. ब्रिटिश शासनकाल में ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि के स्वरूप में क्या परिवर्तन देखने को मिले? उल्लेख कीजिए।

- ब्रिटिश शासनकाल में नयी भूमि प्रणालियो व प्रशासनिक व न्यायिक प्रणालयों के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए।
- गॉवों का प्राचीनकाल से चला आ रहा आत्मनिर्भर स्वरूप समाप्त हो गया और ग्रामीण अर्थव्यवस्था जर्जर स्थित में पहुच गयी।
- ग्रमीण अर्थव्यवस्था की रीड माने जाने वाले लघु तथा कुटीर उघोग लगभग समाप्त हो गये।
- गॉवो में साहूकारों ,महाजनो तथा भूमिपतियों का महत्व बढ गया।
- ग्रामीण क्षेत्रो में भूमि का महत्व भी बढ गया तथा भूमि कृष विक्रय की वस्तु बन गई।

229. सन् 1757ई.से 1857 ई. के मध्य भारतय अर्थव्यवस्था पर अंग्रजी शासन के सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावो को उल्लेखित कीजिए।

सकारात्मक प्रभार:–

- भारतीय तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था का ऐकीकरण

- देश में राजनैतिक ,प्रशासनिक तथा आर्थिक ऐकता की स्थापना
- रेल,सडक तथा संचार के अन्य साधनों का विकास
- पाश्चात्य शिक्षण प्रणाली से भारतीयों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
- आधुनिक प्रकार की वित्तीय संस्थाओं का उदय

नकारात्मक प्रभाव:—

- व्यापार तथा वाणिज्य पर नकारात्मक प्रभाव
- कृषि का व्यवसायीकरण
- परम्परागर आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विनाश
- कृषि में विचोलियों तथा दलालो के एक नये वर्ग का उदय।
- लघु तथा कुटीर उघोगो के पतन से कृषि पर बढती निर्भरता।

An Institute for MPPSC Examination